# भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

| वर्ष 34 अंक : 4 | 1.7.2011 शुक्रवार (जुलाई - अगस्त) | शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00 |
|---|---|---|


## नारद, मेरे संत से अधिक न कोई...

**१५ जुलाई, २०११ – गुरुपूर्णिमा!** भारत में गुरु और शिष्य का संबंध विशिष्ट कहा जाता है। एक ओर, शिष्य की आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक सभी प्रकार की प्रगति का उत्तरदायित्व संपूर्ण रूप से गुरु के कँधे पर होता है, तो दूसरी ओर, गुरु को संपूर्ण रूप से समर्पित होकर जीवन जीने की राह पर अग्रसर होना शिष्य का कर्तव्य होता है। दरअसल, **गुरु ही भगवान और भक्त के बीच का सेतु है।**

भारत की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगने के कारण धीरे-धीरे अधोगति की ओर बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में भगवान रखे हुए प्रगट संत ही उन्हें सन्मार्ग की ओर ले जा सकते हैं। और... भगवान स्वामिनारायण ने तो अपनी ऐसी शुद्ध गुरु परंपरा अखंडित रख कर, अपने आश्रितों को उनकी सेरेछाया में सदैव के लिए सुरक्षित कर दिया ताकि उनके संबंध में आए मुमुक्षु प्रभु प्राप्ति के लिए तत्पर होते रहें। गुरुवर्य योगीजी महाराज द्वारा दीक्षा प्राप्त किए और ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के मानसपुत्र प.पू. गुरुजी अकसर गुरुवर्य योगीजी महाराज की परावाणी को दोहराते हुए बताते हैं कि बापा कई बार निम्न बोधकथा द्वारा हमें हुई प्राप्ति का मर्म समझाते थे –

*'एक गाँव के नासमझ लोग रोज शाम को घर में अंधेरा देख कर परेशान हो जाते थे कि बस, शाम होते ही अंधेरा घर में घुस जाता है और... इस अंधेरे को घर में घुसने से रोकने की उधेड़बुन में वे लगे रहते थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि बस, आज तो इस अंधेरे को किसी भी तरह घर में घुसने से रोकना है। सो, वे घर के बाहर डंडे लेकर बैठ गए और उनमें से कोई एक थोड़ी-थोड़ी देर में घर के अंदर चक्कर मार कर देख आता कि अंधेरा कहीं घुस तो नहीं गया। जैसे ही सांझ हुई और अंधेरा होने लगा कि वे दौड़ कर घर में गए और अज्ञानवश अंधेरे को भगाने के लिए आपस में ही डंडे मारने लगे। डंडे पटकाने से अंधेरा तो नहीं*

*गया, पर वे आपस में ही लहु-लुहान हो गए। आख़िर एक ज्ञानी व्यक्ति ने दीया लेकर प्रवेश किया और तुरंत ही अंधेरा छट गया।'*

प.पू. गुरुजी बताते हैं कि इस बोधकथा का मर्म यह है कि **हम भले ही स्व-साधनों–जैसे जप, तप, व्रत, दान, योग, यज्ञ और तीर्थाटन करके अपने अंतरद्वंद्व को शांत करने के लिए कितने ही हाथ-पैर मारते रहें, लेकिन भीतर का अंधकार-द्वंद्व–तो सच्चे संत के संबंध से ही दूर होगा। भीतर के अंधकार को मिटाने के लिए हमें अपनी बागडोर पूर्ण रूप से गुरु को ही सौंपनी पड़ती है।** मन-बुद्धि की अटकलों, तर्क-वितर्कों को टोटल तिलांजली देकर, गुरु द्वारा दिखाए रास्ते पर चलने में ही हमारा हित समाया होता है। पर, हमारी जड़ प्रकृति-स्वभाव हमें 'गुरु' से पूर्ण प्राप्ति का सुख नहीं लेने देते।

करीब २३० साल पहले पूर्ण पुरुषोत्तम **श्रीजी महाराज** ने **वचनामृत मध्य-३७** में यह स्वाभाविक प्रकृति छोड़ने का अत्यंत सरल उपाय बता कर मुमुक्षु जीव की प्रगति के लिए राजमार्ग प्रशस्त कर दिया। **गुरुवर्य योगीजी महाराज ने तो इस उपाय को शास्त्रों से परे का-प्रकृतिपुरुष से परे का–अनुपम उपाय बता कर नवाज़ा।**

श्रीजी महाराज ने बताया –

*'...जिसे स्वाभाविक प्रकृति छोड़नी हो, उसे सत्पुरुष के वचन में अतिशय विश्वास होना चाहिए। जो सत्पुरुष उपदेश देते हों, उनके प्रति अतिशय प्रीति होनी चाहिए। वे हमारा दिल दुःखाते हुए कैसे भी कठोर वचन कहें, फिर भी उन्हें हितकारी माने, तो स्वाभाविक प्रकृति भी नष्ट हो जाती है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है...'*

सार यही है कि यदि **गुरु जीवन में न हों, तो हम स्वभाववश पशु की भाँति जीवन जीते हैं।** गुरु के बिना जीव कुछ भी पाने में असमर्थ है।

भारत का युवा वर्ग हमारे प्राचीन इतिहास से अवगत होकर प्रेरित हो, इस हेतु से इन दिनों टी.वी. ने वीरगाथाओं पर आधारित कई सीरियल्स जारी किए हैं। सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी जो कुछ भी पढ़ेंगे या देखेंगे, उसमें से भी हमारे लिए जो जरुरी होगा, वह ढूँढ निकालते हैं। थोड़े समय से **'चंद्रगुप्त मौर्य'** सीरियल शुरू हुआ है, जिसमें बालक चंद्रगुप्त का अपने गुरु के साथ अद्भुत संबंध का दर्शन कराया है। सीरियल के एक एपीसोड में चंद्रगुप्त का आचार्य चाणक्य के साथ का निम्न संवाद साधकों के लिए प्रेरणादायी है...

कठिन वीरयात्रा से दुर्लभ कवच प्राप्त करके लौटने पर, उसका श्रेय अपने गुरु को देते हुए **चंद्रगुप्त** कहता है – *आचार्य, ये तो आपके ही आशीर्वाद से संभव हुआ है। नहीं तो क्या मैं, और क्या मेरी योग्यता।*

**आचार्य चाणक्य** – *नहीं चंद्रगुप्त, गुरु केवल मार्ग दिखा सकता है; किन्तु लक्ष्य तक पहुँचना तो विद्यार्थी पर निर्भर करता है। उसके प्रयास, उसकी क्षमता, उसका गुरु पर विश्वास, उसे साधारण से असाधारण बनाते हैं। यही उसे ऊचाँइयों तक ले जाते हैं। गुरु जिनकी कल्पनामात्र करता है, किन्तु शिष्य जब वहाँ तक पहुँच कर दिखाता है, तो वो अपने साथ-साथ अपने गुरु को भी सार्थक बना देता है।*

इतिहास गवाह है कि आचार्य चाणक्य की बताई राह

पर चलते हुए, चंद्रगुप्त ने 'मौर्य' शासन स्थापित करके अखंड भारत की बागडोर संभाली! हमें तो गुणातीत परंपरा के वारिसदारों का संबंध मिला, जो न केवल हमें मार्ग दिखाते हैं, बल्कि लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग भी सुगम करके देते हैं। हमें तो सिर्फ उनमें दृढ़ विश्वास रखते हुए उनके पीछे-पीछे चलना है।

आओ, १९७४ में **प.पू. गुरुजी** द्वारा संकलित कथावार्ता से सर्वोपरि 'गुरुपूजन' का सच्चा अर्थ–मर्म आत्मसात् करके **'गुरुपूर्णिमा'** एवं **'रक्षाबंधन'** के आशिष प्राप्त करें...

**भा**रतीय संस्कृति में **गुरुपूर्णिमा** और **गुरुजयंती** का स्थान अद्वितीय है। ये दिन मानवजीवन के नव सर्जन के हैं। अनेकों भावनाओं एवं उर्मियों के साथ सेवक गुरु के पास पहुँचता है। अपनी भावनाएं साकार हों और अंतर के आशीर्वाद मिल जाएँ, ऐसी सभी को उम्मीद रहती है। सभी अपनी-अपनी रीति से स्थूल या सूक्ष्म समर्पण से 'गुरुपूजन' करते हैं। लेकिन, जब तक गुरुपूजन का सच्चा रहस्य समझ नहीं आया हो, तब तक जीवन में सर्वांगी विकास संभव नहीं है।

### *पूजन का सच्चा रहस्य क्या?*

(१) ऐसे भगवत्स्वरूप संतों को पदार्थों की या मान-मर्तबा की कोई कीमत नहीं। त्रिलोकी उनके लिए काकविष्टा के समान है। लेकिन, सेवक को निर्वासनिक और प्रभु का पनौता पुत्र बनाने के लिए ऐसे पुरुष स्वतंत्र रूप से सेवक के मायिक पदार्थों को ग्रहण करते हैं। उसके फलस्वरूप वे जीव को बल, बुद्धि और प्रेरणा देते हैं। सो, गुरुपूजन के फलस्वरूप वचनामृत लोया ३ के मुताबिक आज्ञा में तनिक भी लोप न हो, ऐसा वर्तने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए। जेतलपुर की वेश्या, मांगरोळ की मुसलमान बाई, जोबनपगी, तखोपगी वगैरह जैसे पाप के पर्वतों से सेवा करवा कर, कृपा से पवित्र बना कर, बुरे प्रारब्ध धोकर सुखी कर दिए। गोरधनभाई, पर्वतभाई, देवजीभाई वगैरह का सर्वस्व लेकर एकांतिक बना दिया! सो, सेवकों को खास ध्यान रखना चाहिए कि उनका लोभ, स्वाद, मान टालने के लिए और अन्य किसी व्यक्ति, पदार्थ, शक्ति में आसक्ति न रहे; बल्कि सच्चे संत से ही अद्वितीयभाव का लगाव रहे, इसी हेतु ऐसे भगवतपुरुष स्वतंत्र रूप से सेवा ग्रहण करते हैं। लेकिन वे कुछ पदार्थ मांगे या मान का खंडन करें या मनमानी छुड़वाएं, तब यदि बुरा लग जाए, तो सेवा का संपूर्ण फल नहीं मिलता। सो, **दिव्यभाव और अहोहोभाव से सेवा** करने का संकल्प करना।

(२) विशिष्ट प्रकार के पूजन का रहस्य यह भी है कि सत्पुरुष की केवल मर्जी में ही वर्तना। **जिस समय जो सत्पुरुष की रुचि हो**, उस समय उनकी रुचि-अभिप्राय में जुड़ जाना चाहिए। मैं ऐसा बरतूँगा, तो बड़े संत राजी होंगे, ऐसा नहीं बरतूँगा तो राजी नहीं होंगे–यूँ अपनी अकल की ऐसी सोच को बिल्कुल छोड़ कर केवल उनकी मर्जी में और कुछ सोचे बिना वर्तना। शास्त्रीजी महाराज द्वारा उठाए गए 'शुद्ध उपासना' के कार्य में जो जुड़े, उन सभी की 'सेवा' सर्वोपरि लिखी गई और बापा का जीवनमंत्र 'संप,

सुहृद्भाव और एकता' के रहस्य को पकड़ कर जो बरते, वे सभी एकांतिक हो गए। **आज भी 'सुहृद्भाव रखते हुए जितना हो, उतना करो' इस रहस्य को प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी व्यापक स्वरूप में रखते जा रहे हैं।** आज हम–

किसी के भी बारे में घटिया बोलें,

किसी की उपेक्षा करें या मिलजुल कर न रहें,

किसी की प्रकृति या क्रिया हमें जँचे नहीं,

प्रसंग पर हमारी धीरज न रहे या पीछे हठ न कर पाएं –

यदि इस प्रकार की कोई भी मानसिक अस्थिरता हो, तो उसे सुहृद्भाव का खंडन करा कहा जाए।

**त्यागी या गृहस्थी के लौकिक व्यवहार सिर्फ लौकिकबुद्धि से हों, तो परेशानी, जलन, उदासीनता या भेददृष्टि खड़ी करेंगे ही।**

स्नेहल सिंधु समान बापा या ऐसे भगवत्स्वरूप संत के समाज (त्यागी, गृही, युवकों या बहनों)–को दृष्टि के समक्ष रख कर, उनकी प्रसन्नता के लिए ही, व्यवहार करेंगे तो कोई परेशानी नहीं रहेगी। कोई सुहृद्भाव रखे या न रखे उसकी चिंता किए बिना स्वयं कभी सुहृद्भाव नहीं छोड़े, तो अतंर की प्रसन्नता के पात्र बन जाएंगे। यह भी सच्चे अर्थ में एक 'गुरुपूजन' ही है।

(३) प्रभु के अल्पसंबंध वाले की महिमा समझ कर सेवा करने की आदत डालो। फल की इच्छा रखे बिना उनमें ओतप्रोत हो जाओ। यूँ महातम–प्रभु की सेवा करने से एकांतिकी भक्ति सिद्ध होगी ही, यह रहस्य भी समझने जैसा है।

(४) सत्संग या सेवा करवा लेने के आग्रह या लगन में पड़ना नहीं। सत्संग तो भगवत्स्वरूप एकांतिक संत के संकल्प से बढ़ने वाला है। साधक को तो निर्मानीभाव से वफादारीपूर्वक स्वधर्म निभाते रहना है। सुहृद्भाव रख कर गुणातीत बाग में खो जाना पड़ता है। बाकी सभी फर्ज़ एकांतिक पुरुष के हैं। **कथावार्ता करना–यह भी सेवा के स्वधर्म के रूप में होनी चाहिए। मनमानी प्रवृत्तियाँ अभाव, अवगुण या बुराई की ओर ले जाती हैं।** सो, जीव सुखी नहीं हो पाता।

ऊपर के चार मुद्दों के अनुसार वर्तने की रुचि रखेंगे, तो सर्वोपरि पूजन हुआ माना जाएगा। गुरुपूर्णिमा का दिन आ रहा है। गुरुभक्ति अदा करने का सर्वोपरि प्रसंग है। अंतर की भावना साकार करने के लिए प्रार्थना करने का दिन है। अगले वर्ष तक इन रहस्यों की जुगाली करने का संकल्प करेंगे, तो स्वामिश्रीजी और गुरुहरि एवं साकार एकांतिक मुक्तों की प्रसन्नता के पात्र बन पाएंगे, सुख-सुख से भगवान भजते हो जाएंगे। गुरुपूर्णिमा का दिन मनाने का फल साकार मिलेगा।

इस रहस्य को समझने के लिए गुरुहरि और साकार मुक्त खूब-खूब बल दें, यही प्रार्थना।

✡✡✡

## पात्रता देखी नहीं, न दोष-गुण, बैठ गए भेद कर चैतन्य में... सौरभ - ३३

स्वामी की बातों में लिखा है कि पहले मुमुक्षु भगवान को ढूँढ़ते थे, पर अब भगवान मुमुक्षुओं को ढूँढ़ते हैं। मुझे भी कुछ ऐसा ही अनुभव हुआ, जब पहली बार मैंने प.पू. गुरुजी के दर्शन किए। बिना कुछ कहे, बिना कुछ सुने, मेरा अंतःकरण भेद करके वे ऐसे बैठ गए कि उसी क्षण भीतर में ऐसा हो गया कि मुझे शादी नहीं करनी और प.पू. गुरुजी की निश्रा में भगवान ही भजने हैं। उस समय मेरी उम्र करीब १३-१४ वर्ष की थी।

सच, प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी ने कृपा करके बचपन में ही अपना जोग दे दिया। जिससे बाहर की माया, यहाँ तक कि किसी बाह्य पूजा-आडंबर के प्रति भी रुचि नहीं रही। हाँ, भगवान भजना भी कुछ होता है, इसका लेशमात्र भी ख्याल नहीं था। महिलाएँ भी भगवे कपड़े धारण करके प्रभुमय जीवन जीती होंगी, इसकी तो मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। पर, मेरे दिलोदिमाग़ और चित्तपट्टी पर प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी ऐसे छा गए या यूँ कहो कि उन्होंने उसी पल से अपना ऐसा अधिकार कर लिया कि जाग्रत अवस्था में तो उनकी स्मृति रहती ही थी, परंतु उसके बाद का मुझे ऐसा एक भी स्वप्न याद नहीं जिसमें प.पू. गुरुजी ने मुझे दर्शन न दिए हों। साधु की मर्यादा के कारण वे डायरेक्ट बात तो नहीं करते थे, लेकिन मुझे जब कभी भी किसी समस्या का समाधान चाहिए होता था, तो वे सपने में आकर मुझे दे जाते थे। मुझे कभी एहसास ही नहीं हुआ कि वे मुझसे बात नहीं करते।

थोड़े समय के बाद प.पू. दीदी के दर्शन हुए। वे भी मेरे मन को एकदम भा गईं। स्कूल में पढ़ने के कारण मैं केवल रविवार की सभा में आती थी और प.पू. दीदी नॉन कॉलेज में पढ़ाई करने के कारण रविवार को क्लास में गई होती थीं! और जब मेरा सभा से वापिस जाने का समय होता, वही उनका कॉलेज से वापिस आने का समय होता था। अतः उनसे ज्यादा बातचीत नहीं हो पाती थी। परंतु उनके प्रति एक प्रकार का खिंचाव हमेशा बना रहता और मेरी यही हार्दिक इच्छा होती कि मैं उनके पास जाकर बैठूँ।

परिवार के साथ सत्संग में आते-जाते थे, पर छोटी आयु के कारण प.पू. काकाजी की बातें समझ में नहीं आती थीं। फिर भी, जब भी वे दिल्ली आते तो यही इच्छा रहती कि प.पू. काकाजी के दर्शन करने मंदिर पहुँच जाएँ।

* पूर्वाश्रम में मेरे पापा को मेरे भगवान भजने से कोई आपत्ति नहीं थी। परंतु मम्मी अपनी ममता के कारण चाहती थीं कि मैं साध्वी न बनूँ। सो, उन्हें मेरा मंदिर आना-जाना ज्यादा पसंद नहीं आता था। मैं इसी बात को लेकर बहुत दुविधा में थी और समझ में नहीं आ रहा था कि मम्मी से कैसे भगवान भजने की अनुमति लूँ। उन दिनों प.पू. काकाजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी दिल्ली आए हुए थे। एक दिन वे दोपहर को प.भ. चाँदप्रकाशजी के घर पधरामनी के लिए गए हुए थे। मैं पू. दुर्गा आंटी के साथ वहाँ गई। उस समय प.पू. काकाजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी प्रसाद ले रहे थे। हम दोनों बाहर खड़े-खड़े दर्शन करने लगे। भोजन बीच में छोड़ कर प.पू. काकाजी कमरे से बाहर आए और अंतर्यामी रूप से मुझसे बोले– ***बेबी, भगवान से हमेशा एक ही प्रार्थना करना कि जो भी करना, मेरे हित में करना; ऐसा नहीं***

***कि मुझे शादी ही करनी है या भगवान ही भजने हैं।***

इतना कह कर वापिस कमरे में चले गए। यह सुन कर मुझे विशेष संतुष्टि नहीं हुई, पर अपनी सीमित बुद्धि से सोचती रहती कि अगर मैं ऐसी प्रार्थना करूँगी और यदि शादी करना मेरे हित में आ गया, तो पता नहीं कहाँ शादी होगी और सत्संग का जोग फिर होगा या नहीं। सच, उस समय तो प.पू. गुरुजी की निश्रा के बिना जीने की कल्पना करना मेरी क्षमता से बाहर था। सो, इस डर के कारण मैं ऐसी प्रार्थना नहीं करती थी।

प.पू. गुरुजी की परावाणी में अकसर सुना है कि अतिशय बड़े संत की बातें हम स्वयं नहीं समझ पाएंगे। लेकिन कोई पहुँचे हुए संत उसका मर्म समझा सकते हैं। एक बार प.पू. गुरुजी ने अक्षरज्योति में संदेश भिजवाया कि जिन-जिन बहनों को काकाजी के साथ के जो भी अनुभव हुए हों, वे लिखें। सो, मैंने यह प्रसंग लिख कर उन्हें भेजा था। उस पर टिप्पणी करते हुए प.पू. गुरुजी ने सेवक से कहलवाया कि जैसे ही हम काकाजी जैसे बड़े संत की दृष्टि में आते हैं, वे हमें एक टॉर्च लाइट देते हैं। ***उन्होंने तेरे इस नॅचर पर प्रकाश डाला कि तेरा नॅचर जिद्दी है।*** सो, ***भले ही अच्छी बात हो पर उसके लिए भी जिद्द नहीं करनी।*** जिदंगीभर के लिए यह जीवनसूत्र दे दिया कि प्रार्थना करना कि हे प्रभु! जो करना, मेरे हित में करना। उस दिन से यह बात मेरे दिलोदिमाग़ में बैठ गई। तब से मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि हे प्रभु! जो करना मेरे हित में करना।

* जब सत्संग में आने लगे, तो यह सुना कि प.पू. काकाजी की इच्छा है कि दिल्ली में पाँच संत, पाँच सेवक, पाँच बहनें और पाँच गृहस्थ ऐसे तैयार हों, जो प्रभु के होकर जीते हों। बस तभी यह बात मेरे मन में बैठ गई कि प.पू. काकाजी के इस संकल्प में मुझे भी अपना नंबर लगाना है। पाँच के बाद और भी मुक्त आएँगे, पर इस संकल्प में आने का सौभाग्य किस प्रकार मिलेगा? प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी ने मानो मेरे अंतर की आवाज़ को सुन लिया। उन्होंने मेरी भावना पूरी की और अक्षरज्योति में भगवान भजने आने के लिए मेरा पाँचवाँ नंबर लगा ही दिया। इसी बीच ७ मार्च १९८६ को प.पू. काकाजी अंतर्धान हुए। सच, किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि अचानक ऐसा हो सकता है। दिल ऐसा टूट गया कि इस दुःख में से उबर पाना नामुमकिन लगता था। न भूख, न प्यास–बस रोना बंद ही न हो। करीब १५-२० दिन ऐसा ही चलता रहा। थोड़े दिन के बाद अन्नकूट की सेवा के लिए **सौ. मधु जीजी** के घर प.पू. दीदी के पास रहने के लिए आई। इसी दौरान हमेशा के लिए प.पू. दीदी के पास आकर मेरा रहना तै हुआ और... ७ मार्च १९८८ को मुझे प.पू. दीदी के वरद् हस्तों पार्षदी दीक्षा मिली। जब ७ मार्च को १९८८ को मैं प.पू. दीदी के साथ मंदिर गई, तो सेवक द्वारा प.पू. गुरुजी ने उन्हें कहलवाया–

  ***सौंप दो इसे काकाजी को! आप कहते थे न कि अब पाँच हो जाओ। हरियाणा से, पंजाब से, यू.पी. से, नहीं तो फॉरेन से। ये लो आपकी पाँचवी।*** तब से अक्षरज्योति में प.पू. दीदी की निश्रा में रहने का अवसर मिला।

* पूर्वाश्रम में हमारा परिवार दिल्ली के तिमारपुर एरिया में रहने के लिए गया था। वहाँ बाजार दूर था।

मिठाई में मुझे जलेबी बहुत पसंद थी। एक दिन मेरा जलेबी खाने का बहुत मन हुआ, इतना मन हुआ कि रहा नहीं जाए। लेकिन बाजार दूर होने के कारण और रात होने के वजह से जलेबी लानी भी मुश्किल थी। उसी दिन मेरे पिता मंदिर आए हुए थे और मंदिर में उसी दिन उंधिया व जलेबी का प्रसाद था। प.पू. गुरुजी ने उन्हें जलेबी दी और कहा– यह नीता को खिला देना। अगर वह सो भी गई हो, तो उसे उठा कर खिलाना। मेरे पिता घर पर आए तो वाकई में मैं सो चुकी थी। सो, उन्होंने मुझे जगा कर कहा कि गुरुजी ने तेरे लिए जलेबी भिजवाई है। बात बहुत छोटी-सी है, पर इससे मुझे लगा कि जब इतनी-सी बात को भी दूर बैठे जानकर वे पूरा कर सकते हैं, तो मेरे लिए जो जरुरी होगा, वह भी पूरा करेंगे ही।

* भगवान भजने की शुरुआत में अपने अतंर के प्रश्नों के उत्तर के लिए मैं चाहे कितने भी काग़ज़ लिख कर प.पू. गुरुजी को भिजवाती, लेकिन वे उनका जवाब देने के बजाय अपने सोफे की गद्दी के नीचे रख देते और कभी भी जवाब नहीं देते थे। पर दूसरी ओर– मेरे सपने में छोटी से छोटी बात का भी वे मुझे उत्तर दे देते। आख़िर एक बार तो मैंने लिख कर उनसे पूछा भी कि ऐसा क्यों होता है। तब प.पू. गुरुजी ने उत्तर भेजा था– ***प.पू. काकाजी जैसे संत के जोग में आ जाने के बाद हमारी स्वप्नसृष्टि के रचियता ऐसे भगवत्स्वरूप संत होते हैं।***

  एक बार मुझे सपना आया कि गुजरात में कहीं सभा चल रही है। वहाँ प.पू. गुरुजी आशिष प्रदान कर रहे हैं और मैं वहीं नज़दीक बैठी हूँ। प.पू. गुरुजी मुझे सेवक द्वारा कहलवा रहे हैं कि 'अनुपम भाग-२' का रोज पाठ करना, तो अंतर में सब ठीक हो जाएगा। यह बात किसी को बताए बिना, मैंने उसी दिन से 'अनुपम भाग-२' पुस्तक पढ़नी शुरू कर दी। आठ-दस दिन के बाद प.पू. गुरुजी ने सेवक द्वारा प.पू. दीदी को कहलवाया कि अक्षरज्योति में 'अनुपम भाग-२' की पारायण रखो। यह प्रसंग मेरे दिल को इतना छू गया कि प.पू. गुरुजी को मेरे प्रति कितना लगाव होगा कि मेरे लिए क्या जरुरी है, उसके लिए सपने में भी उनका वही उद्यम रहता है। प.पू. गुरुजी अपनी बातों में इस पुस्तक का अकसर जिक्र करते हैं कि रोजमर्रा साधक के जीवन में आती समस्याओं में से कैसे निकला जाए, इस बात को इस पुस्तक में अच्छे ढंग से समझाया गया है।

* ऐसा ही एक अन्य प्रसंग– मेरा स्वभाव मुँह पर ही किसी को स्पष्ट कह देने का है। पर, इससे कभी-कभी अच्छी खासी प्रॉब्लम खड़ी हो जाती है, क्योंकि न कहते बनता है और न ही सहते बनता है। तब समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। ऐसी ही उधेड़बुन में मैं एक रात धुन का उपाय लेकर सो गई। सपने में प.पू. गुरुजी ने आकर कहा– किसी की कोई बात चुभ जाए, तो भी उसे बोल मत। बोलोगी तब भी वह बदलने वाला तो है नहीं। इससे अच्छा है तीव्रता से भजन कर। बस, इतने में सपना पूरा हो गया। पर, हमेशा यह बात याद नहीं रहती। हाँ, जब भी याद आती है, तो खूब सहाय कर जाती है। सो, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी एवं सभी स्वरूपों के चरणों में अंतर की प्रार्थना है कि यह बात मैं हमेशा याद रख पाऊँ और सुखी हो जाऊँ!

* ३० जुलाई २००२ की बात है। अक्षरज्योति की एक साधक बहन के साथ सहज ही मैं निम्न बात कर रही थी –

*'प.पू. गुरुजी की ओर हमारी महिमा की दृष्टि नहीं है। उन्होंने हर एक मुक्त को उसके चार्ट के मुताबिक लाड़-प्यार किया है। लेकिन हमारी जीवदशा ऐसी है कि* ***प्रसंग पर हम वह भूल जाते हैं और बराबरी करने लगते हैं कि हमारे लिए थोड़ा किया और किसी दूसरे मुक्त का ज्यादा ख्याल रखते हैं*** *– वगैरह-वगैरह। लेकिन हमारे लिए भी तो किया है ही।* ***हम अपने लिए उनके द्वारा किया परिश्रम भूल जाते हैं,*** *उसकी जुगाली नहीं करते,* ***इसलिए जिसका वे रखते हैं उसके प्रति ईर्ष्या के या फिर प.पू. गुरुजी के प्रति मायिकभाव के पचड़े में पड़ जाते हैं।*** *प.पू. गुरुजी ने हमारे लिए जो भी किया है, उसके बदले में हम उन्हें दुःख-दर्द के अलावा कुछ नहीं देते। यह विचार जब-जब मेरे मन में आता है, तब अपने ऊपर ग्लानि होती है और गुरुजी के सामने जाने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि किस मुँह से उनके दर्शन करने जाएँ। अब तो सच में ऐसी इच्छा है कि यह सब कुछ छोड़ कर उन्हें जो पसंद है, वह करने लग पड़ें। हम ऐसा वर्तन करने लगें कि उनको हमारी ओर से अंतर में ठंडक हो जाए। इसी में हमारे जीवन की सार्थकता है।'*

यह बात सुबह करीब ११:३० बजे की है। उसी दिन प.पू. गुरुजी सुबह की फ्लाईट से मुंबई गए थे और तभी पहुँचे थे। उसी समय फोन से प.पू. गुरुजी ने मॅसेज भिजवाया कि मैं जब तक वापिस आऊँ, तब तक सभी बहनें संत के साथ के वे प्रसंग – जो बहनों को खूब टच कर गए हों, रोज लिखें। यह मॅसेज सुन कर मैं तो हैरान हो गई और एहसास हुआ कि दिव्य रूप से प.पू. गुरुजी ने हमारी सारी बातें सुनी हैं। यूँ प.पू. गुरुजी ने अपने अंतर्यामी रूप का दर्शन कराया। तो, हे गुरुजी ! आप ही कृपा करके मेरी मति स्थिर कर देना – ऐसा बुद्धियोग देना कि हमेशा ऐसी सद्‌बुद्धि रहे !

* प.पू. गुरुजी का एक सिद्धांत मुझे बहुत टच कर जाता है। **अपने गुरु की महिमा तो कोई भी गाएगा, यह कोई बड़ी बात नहीं।** पर, प.पू. काकाजी की परावाणी में अकसर यह बात सुनने में आती है कि **सर्वदेशीयता** रखे बिना गुणातीतभाव में प्रवेश ही नहीं कर सकते। सो, **प.पू. काकाजी** का यह **सिद्धांत उन्होंने पकड़े रखा है।** जैसा भाव प.पू. काकाजी के प्रति, वैसा ही प.पू. पप्पाजी के प्रति और वैसा ही प.पू. स्वामिजी एवं सभी प्रगट स्वरूपों के प्रति रखा है। **प.पू. काकाजी और अपने से जुड़े पूरे दिल्ली – समाज में उन्होंने अपने वर्तन से वही भावना भर दी है।** स्थूल बीमारी ग्रहण करने पर हमें प.पू. काकाजी के प्रति जितना दुःख होता था, उतना ही दुःख प.पू. पप्पाजी के प्रति हुआ और प.पू. स्वामिजी एवं स्वरूपों के लिए भी होता है। **यह कोई आसान या छोटी-मोटी बात नहीं है।**

जहाँ **चार सेवक आगे-पीछे चक्कर काटने वाले हो जाएँ, वहाँ अपनी प्रतिभा कैसे चमके उस पैरवी में लगने का हम प्रयत्न करते हैं।** जबकि – **प.पू. गुरुजी के जीवन में सिर्फ इन विभूतियों की ही अहमियत है।** राजधानी दिल्ली में अशोकविहार के मुख्य मार्ग का नाम **'स्वामिनारायण मार्ग'**, मंदिर के लिए आती छोटी सड़क का नाम **'काकाजी लेन'** और अब मंदिर के बगल की जमीन पर बनाए पार्क का नाम **'तीन फरवरी पार्क'** रखने के पीछे उनकी यही भावना है कि अभिनिवेश या

बड़प्पन पाने की चाह से भविष्य में यदि प.पू. काकाजी को भुलाने का कोई प्रयास भी करे, तो कोई न कोई तो यह पूछेगा ही कि ये काकाजी कौन थे।

कई बार तो प.पू. काकाजी के प्रति प.पू. गुरुजी की जो अप्रतिम प्रीति है, उसके बारे में सोच कर दिमाग़ और दिल सुन्न हो जाते हैं! किसी भी साधारण वस्तु को स्वरूप से जोड़ कर अमूल्य बनाना सीखना हो, तो यह कला प.पू. गुरुजी से सीखनी चाहिए। फिर वो पलंग का बॅकरेस्टर हो, सोफे या दानपात्र की कार्वींग हो; किसी न किसी प्रकार से गुणातीत समाज के आद्य सर्जक प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के चिन्ह उसमें अंकित करवाते हैं। स्टील का ग्लास हो या चाय पीने का कप या पेन हो, उस पर भी ऐसे सिम्बाल लगवा कर सुसज्जित करवा देते हैं। इससे अधिक, मंदिर में पीछे स्वर्ण द्वार के पास छोटे-छोटे दो लॉन हैं, वहाँ सीमेन्ट की जाली की बाऊंडरी बनानी थी, तो प.पू. गुरुजी ने उसमें भी प.पू. काकाजी का सूर्य वाला लोगो बनवाया। यह देख कर मैं हैरान हो गई कि सच में प.पू. गुरुजी पर यह पंक्ति एकदम लागू होती है–चारों तरफ है उनका नज़ारा...

प.पू. गुरुजी के मुख से ही सुना है कि एक बार प.पू. काकाजी के साथ उनकी एक गोष्ठि हुई। प.पू. काकाजी ने कहा–

***मुकुंद, तेरा और बापु का मैं बखान करूँ, यह उचित नहीं है। तुम दोनों के विकास में आऊटराईट मेरा ही योगदान है। सो, तुम्हें तो पप्पाजी और स्वामिजी सर्टीफिकेट दें, इसी में पूर्णाहुति कही जाए।***

**आज एहसास होता है कि–प.पू. काकाजी की इस चाहना में भी प.पू. गुरुजी अव्वल दर्जे से पास हो गए हैं।**

**अपने गुरु से प्रीति करना यह एक बात है, पर उसके सिद्धांत को उससे भी अधिक प्यारा रखना और अपने जीवन में उतारना, यह अनोखी बात प.पू. गुरुजी के जीवन में साक्षात् दिखाई पड़ती है।**

* प.पू. गुरुजी ने खूब करुणा करके मुझे ऑडियो की सेवा दी। शुरुआत के वर्षों में प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी के नेतृत्व में जो साधकों की शिविर होती थी, उसमें मैंने प.पू. गुरुजी के कई आशीर्वचन सुनें हैं। मैंने नोट किया कि **जब भी प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन देने की बारी आती, तो उस समय पिन ड्रॉप साइलन्स हो जाता था। दिल्ली वाले गुरुजी बात कर रहे हैं, तो आवाज़ बंद! मतलब, इनकी बात खूब मार्मिक होगी और हमारे लिए कुछ जरुरी हल जरुर मिलेगा।**

प.पू. काकाजी के साक्षात्कार हीरक आनंदोत्सव के पावन अवसर पर आपके चरणों में अंतर की एक ही प्रार्थना है कि आपने हमें खूब दिया है और... प.पू. काकाजी के शब्दों में– 'स्पीरीच्युअल टॅक्नीशियन' तो आप हो ही; सो अपनी कृपा से–अनुग्रह से–मेरा तंत्र आप ऐसा बना देना–जैसे जहाँ भी चलाना तू चाहे, कदम मेरे वैसे ही चल पड़े...

*– साध्वी निष्ठा, अक्षरज्योति*

## सौरभ - ३४

**સ્વામિશ્રીજી**

**...ગુરૂજી એટલે કાકાજીના માનસપુત્ર અને પપ્પાજીના અતિ વ્હાલા દીકરા. પૂર્વાશ્રમનું એમનું નામ દિલીપભાઈ. લલિતાબેન અને ધનપ્રસાદભાઈને ત્રણ દીકરા. દીકરી નહીં, તેથી એમણે મને દીકરી બનાવેલી. એટલે દિલીપભાઈરૂપે મને દિવ્ય ભાઈ મળ્યાનો આનંદ થયો ને હું ધન્ય થઈ ગઈ...**

**...યોગીબાપાની દૃષ્ટિમાં દિલીપભાઈ આવ્યા. હૃદય ને સમજણ-ભાવનો સુંદર સુયોગ. યોગીબાપાએ દિલીપભાઈને સાધુ બનાવવા જીવમાં લીધા... એના જીવમાં કોઈ જગત જ નહીં. પણ, એમનો રજોગુણી સ્વભાવ એવો કે એના બૂટની દોરી પણ કામવાળો બાંધી આપે. આવી પ્રકૃતિનું પરિવર્તન અહીં જ છે એની ખાત્રી તો જુઓ... આજે એવા એ ગુણાતીત સાધુ બની કાકાજી મહારાજનો આખો સમાજ સાચવી એમના અસલી વારસદાર બની ગયા છે.**

**મારા આ દિવ્ય ભાઈ માટે મને એક અનોખું ગૌરવ છે કે આપણા ભારત દેશની રાજધાની દિલ્હીમાં સૌ પ્રથમ સ્વામિનારાયણ મંદિર બાંધવાનો શાસ્ત્રીજી મહારાજનો સંકલ્પ હતો, એ તેમના જ વારસદાર કાકાજી મહારાજે ઝીલ્યો ને ગુરૂજીને સઘળી જવાબદારી સોંપી. ગુરૂજીએ એ કાર્ય સફળતાપૂર્વક હેત ને હિંમતથી પાર પાડયું. એથી ય વિશેષ કાકાજી-પપ્પાજીની આરસની મૂર્તિ મંદિરમાં પધરાવીને કાકાજી-પપ્પાજી મહારાજનો દિગંતમાં મહિમા પ્રસરાવ્યો. ગુરૂજીને અગણિત વંદન...**

***કુસુમ નલીનકાંત દવે, વિદ્યાનગર***

### [ हिन्दी अनुवाद ]

...गुरुजी यानि काकाजी के मानसपुत्र और पप्पाजी के खूब लाड़ले बेटे। पूर्वाश्रम में उनका नाम दिलीपभाई। ललिताबेन और धनप्रसादभाई के तीन बेटे थे। बेटी नहीं थी, सो उन्होंने मुझे अपनी बेटी माना था। यूँ दिलीपभाई के रूप में मुझे दिव्य भाई मिलने से आनंद हुआ और मैं धन्य हो गई...

...योगीबापा की दृष्टि में दिलीपभाई आए। हृदय और बुद्धि के भाव का यह सुंदर समन्वय था। योगीबापा ने दिलीपभाई को साधु बनाने की जीव में ठान ली... दिलीपभाई के जीव में कोई जगत ही नहीं था। लेकिन, उनका रजोगुणी स्वभाव ऐसा कि उनके जूते के फीते नौकर बाँध कर देता था। ऐसी प्रकृति का परिवर्तन गुणातीत संतों द्वारा ही संभव है, यह साक्षात् देखने को मिला... आज, वे गुणातीत साधु बन कर काकाजी महाराज के सारे समाज को संभालते हुए उनके असली वारिसदार बने हैं।

मेरे इस दिव्य भाई पर मुझे एक अनोखा गर्व है। हमारे भारत देश की राजधानी दिल्ली में सर्वप्रथम स्वामिनारायण मंदिर बनवाने का शास्त्रीजी महाराज का जो संकल्प था, उसे उनके ही वारिसदार काकाजी महाराज ने झेला और गुरुजी को सारी जिम्मेदारी सौंपी। गुरुजी ने चाव और हिम्मत से वह कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इससे भी अधिक काकाजी-पप्पाजी की संगमरमर की मूर्ति मंदिर में पधरा कर काकाजी-पप्पाजी महाराज की महिमा दिगंत में फैला दी। गुरुजी को अगणित वंदन...

*कुसुम नलीनकांत दवे, विद्यानगर*

સ્વામિશ્રીજી

सौरभ - ३५

**...'આત્મબુદ્ધિ-પ્રીતિ' – એ શું છે, શું કહેવાય ? એ પોતાના વર્તને કરી પ.પૂ. ગુરૂજીએ અમને શીખવ્યું.** શીખવ્યું તો ખૂબ જ, પરંતુ અમે એમાંથી થોડું – ઘણું વર્તી શક્યા છીએ. હું ગુજરાત ઍપાર્ટમેન્ટ્સમાં રહું છું. ત્યાં દસ-બાર કુટુંબ એકબીજાં સાથે આત્મબુદ્ધિ-પ્રીતિથી જોડાયેલાં છે. અત્યારે અમારા જીવનમાં જે વાત સહજ બની ગઈ એ પ.પૂ. ગુરૂજીના પરિશ્રમનું જ પરિણામ છે. એકબીજાના ઘર પ્રત્યે-વ્યક્તિ પ્રત્યે 'આ અમારાં કે મારા છે' – એ જે મનાયું ; એમાં- એકબીજાની વસ્તુ વાપરવી- કરવી, એકબીજાની સાથે જવું-આવવું, એકબીજાની સેવા કરવી – એ સહજ જ બની ગયું. સોનાની જણસ કે ગાડી પણ અમે એકબીજાની સહજ જ વાપરતા-કરતાં થઈ ગયા. ક્યારે ય સૂનું લાગ્યું જ નહીં.

...જ્યારે મને પેટનું અલ્સર થયું'તુ ત્યારે બધાંએ મળીને એવી સેવા કરી કે ક્યાંય કહેવાપણું જ ન રહ્યું. **અરસ-પરસ અથડાઈએ ત્યારે સહજ જ આ સ્મૃતિ કરી લઉં છું કે એ સમયે દરેક જણે મારી કેવી સેવા કરી, એટલે ઓરોભાવ જતો રહે છે.**

સત્સંગમાં મારી શરૂઆત માંદગીના લીધે થઈ. મને બન્ને કિડનીમાં ઘણાં સ્ટોન થયા હતા. એથી બી.પી. વધારે રહે અને બે-ત્રણ દિવસ થાય ને હું પથારીમાં જ હોઉં. **સૌ. શોભનાભાભી** અમારી ઉપરના ફ્લેટમાં નવા-નવા રહેવા આવેલા. એ મને બ્હાર હીંચકા ઉપર બેસીને કામ કરતી કે એમ જુએ. એમને થાય કે આ છોકરી ક્યાંય જતી નથી, કંટાળતી નહીં હોય ? એકવાર મારે એમની સાથે વાત થઈ કે મને કિડનીની વધારે પ્રૉબ્લેમ છે. તે મને કહે ચાલ મારા ગુરૂજી છે, તેમની પાસે તને લઈ જઉં. પ.પૂ. ગુરૂજીને મેં મારી વાત કહેવડાવી કે મને બન્ને કિડનીમાં સ્ટોન છે ને મારે એ કઢાવવા માટે ઉરલીકાંચન જવું છે. પરંતુ ઘરનાં બધાં તૈયાર નથી. પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહેવડાવ્યું કે જ્યાં પણ સ્ટોન કાઢી આપે ત્યાં જાવ. છેલ્લે મારે અમદાવાદ મારા પિયર જ જવાનું થયું. આશ્ચર્ય કે પ.પૂ. ગુરૂજીના કહ્યા પ્રમાણે ત્યાં મેં એક વૈદ્યની દવા કરી અને એમણે વગર દુ:ખાવાએ બધાં જ સ્ટોન કાઢી આપ્યા. એ સમયે ખૂબ માંદગીમાં મારાથી ઊભું પણ ન થવાય એવી હાલત હતી. ત્યારે મેં પ્રભુને પોકાર કરેલો કે આવું જીવન શા કામનું કે મારાથી પોતાની જાતે વાળ પણ ઓળી શકાતા નથી અને... મને અંતરમાંથી જવાબ આવેલો કે આપણે જીવવાનું છે અને ભક્તિના માર્ગે ચાલવાનું છે. ત્યારે મને મનમાં થયેલું કે એ માટે તો જીવંત સ્વરૂપ જોઈએ, ફોટાથી નહીં ચાલે. એના જવાબરૂપે **અંતરમાં અવાજ આવ્યો કે તું શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં જાય છે ત્યાં તારું કામ 'પ.પૂ. ગુરૂજી' દ્વારા થશે.** તે પછી હું દિલ્હી આવી અને સાચે જ મંદિરમાં આવતી-જતી થઈ. શ્રી પ્રભુનો સંદેશ હોવાથી **'પ.પૂ. કાકાજીએ પણ મારો સ્વીકાર કર્યો છે' – એવી સપનામાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને પ્રતીતિ કરાવી.**

પછી તો અનુભવોની શરૂઆત થવા લાગી. મેં **'હરિચરણની સુરસરિતાઓ'** વાંચવાની શરૂઆત કરેલી. એમાં એક બેનને એવાં અનુભવ થાય કે એમને શ્રીજી મહારાજ અત્યારે ક્યાં વિચરણ કરે છે અને ત્યાંથી હવે સંઘ સાથે પોતાને ત્યાં આવશે – એ દેખાય ને એથી એ ૧૫૦ જેટલાં ભક્તોની રસોઈ

પણ કરાવડાવે. અને... શ્રીજી મહારાજ ખરેખર ત્યાં પહોંચ્યા જ હોય. વાંચતા-વાંચતા મને એવો વિચાર આવી ગયો કે જો ત્યારે આવી ઘટના બનતી હોય અને અત્યારે પણ શ્રીજી મહારાજ પ.પૂ. પપ્પાજી અને પ.પૂ. સ્વામિજી જેવા સ્વરૂપો દ્વારા પ્રગટ છે, તો કેમ આવું કંઈ સંભળાતું નથી કે આવી વાતો બનતી નથી. અને... આશ્ચર્યની વચ્ચે એ ઘટનાઓ તો મારી સાથે જ શરૂઆત થઈ ગઈ! પ.પૂ. ગુરૂજી વડોદરાથી દિલ્હી પાછા આવી રહ્યા હતા અને વગર કોઈ સંપર્કે મારી સાથે એમની વાત થઈ કે અમે આવીએ છીએ. તે જ સમયે સૌ. શોભનાભાભી મારા ઘરે આવ્યા અને મારા પતિ રાકેશભાઈને કહેવા લાગ્યા, ગુરૂજી આજે પાછા આવે છે. આ સાંભળીને મેં તરત જ એમને કહ્યું કે આ વાત તો હમણાં જ મારી સાથે ગુરૂજીએ કરી છે. બસ, એના પછી તો આવી ઘટનાઓની પરંપરા જ ચાલુ થઈ ગઈ! બીજે દિવસે અગિયાર વાગે હું તો કારના લાયસન્સ માટે ગયેલી હતી. ત્યાં મેં જોયું કે પ.પૂ. ગુરૂજી દિલ્હી-સ્ટેશન ઉપર ટ્રેનમાંથી ઊતર્યા. મેં ઘડિયાળમાં જોયું કે ટ્રેન સમયસર હોય તો બરોબર એ જ સમય હતો.

પછી તો જ્યારે પણ વિચારું-કરું કે પ.પૂ. ગુરૂજી શું કરતા હશે કે તરત જ જ્યાં પ.પૂ. ગુરૂજી હોય તે જગ્યા અને શું વાત કરે છે કે શું પ્રસંગ ચાલે છે એ બધી વાત નજરોનજર દેખાય. એકવાર એવો જ વિચાર આવ્યો કે પ.પૂ. ગુરૂજી શું કરતાં હશે ? એ સમય શિયાળાનો હોવાથી દિવસ જલ્દી આથમતો. તો સેવકને કહેતા પ.પૂ. ગુરૂજીને સાંભળ્યા કે સ્વામી કો બોલો, અબ અંધેરા જલ્દી હોને લગા હૈ, તો શામ કી આરતી છે બજે શુરૂ કર દે અને... આખી આરતીના દર્શન પણ થયા. એ સમયે હું ઘરમાં રસોઈની તૈયારી કરતી હતી. શાક કાપતી હતી. કેટલુંક શાક તો બરાબર હતું, પરંતુ એમાં ડીંટા અને છોડાં પણ સાથે જ જતા. જ્યારે સભાન અવસ્થામાં આવી ત્યારે ખબર પડી કે કચરો પણ શાકની ભેગો જ છે...

એકવાર મારા દિયરને ત્યાં **'સત્યનારાયણની કથા'** હતી. એ વખતે પ.પૂ. ગુરૂજી હરિધામ જવાના હતા, એટલે મારે સ્ટેશને દર્શન કરવા જવું'તું. પણ ઘરમાંથી નીકળાય એમ ન હોવાથી હું ચાલતી કથામાં પોતાનું ભજન કરતી ને પ.પૂ. ગુરૂજીને યાદ કરતી હતી. ત્યાં તો દિલ્હી સ્ટેશન દેખાવા લાગ્યું અને ટ્રેન ચાલવા લાગી. ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજી દરવાજા પાસે ઊભા રહી બધાંને 'જય સ્વામિનારાયણ' કરી રહ્યા હતા... મને વિચાર આવ્યો કે આ મને જે દેખાય છે એ સાચું જ છે કે હું કલ્પનાના ઘોડા જ દોડાવું છું. તરત જ પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને બતાવેલું કે આ દેખાય છે એ ખોટું નથી અને કહ્યું કે તારે પૂછવું હોય તો સેવકને પૂછજે કે ટ્રેનમાં મેં સૌથી પહેલાં પ.ભ. ભાંભરી સાહેબને ઘરેથી આવેલો બટાકાપૌઆનો નાસ્તો જ લીધો છે ને ? એના પછી રાત્રે ૩:૩૦ વાગે પ.પૂ. ગુરૂજી વડોદરા સ્ટેશન ઉપર ઊતર્યા છે અને એમને લેવા કોઈ આવ્યું નથી ને ઠંડીના દિવસો હોવાથી એમને ઠંડી લાગી રહી છે—એવું દેખાયું. અડધો-પોણો કલાક થઈ ગયો છે અને લેવા આવનારૂં કોઈ દેખાતુ ન્હોતું. મારું તો અહીં રડવાનું ચાલુ થઈ ગયું. સૂતા-સૂતા રડવાનો અવાજ સાંભળી મારા પતિએ કહ્યું કે કેમ રડવા લાગી છે, કંઈ થાય છે ? તો, મેં આખી ઘટના બતાવી, એટલે 'એ' કહે એવું નહીં હોય, હજુ તો ટ્રેન સ્ટેશન ઉપર પ્હોંચી પણ નહીં હોય. અત્યારે સાડા ત્રણ જ વાગ્યા છે અને ટ્રેન તો ચાર વાગ્યા પછી સ્ટેશને પ્હોંચશે. પણ, બે-ત્રણ દિવસ પછી પ.પૂ. દીદી મારફતે જાણેલું કે તે

દિવસે ટ્રેન ખરેખર અડધો કલાક-ચાલીસ મિનિટ બીફોર ટાઈમ પ્હોંચી ગયેલી, એટલે રીસીવ કરનારા ત્યારે સ્ટેશને પ્હોંચી ન્હોતા શક્યા!

શુરૂઆતમાં હું મંદિર જતી, ત્યારે મને એમની (રાકેશભાઈની) ખૂબ ચિંતા રહેતી. એમનું કામ ટ્રાવેલીંગનું હતું, એથી એમને બ્હારગામ જવા-આવવાનું ખૂબ રહે. વળી, એ ગાળામાં મારા ભાઈનું પ્લેન ક્રેશમાં અકસ્માત મત્યુ થયું હોવાથી, એક ડર હંમેશા રહેતો. એટલે એ કયાંય જાય તો હંમેશા પ.પૂ. ગુરૂજીને પ્રાર્થના કરું અને એમનું ધ્યાન રાખી સહીસલામત ઘરે પાછા લાવવાની મનોમન વિનંતી કરુ. એ ગાળામાં હું જ્યારે પણ મંદિરે જાઉં ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજી મને સામેથી કહેવડાવે કે આજે રાકેશભાઈ મુંબઈ ગયા છે-કલકત્તા ગયા છે; એમ અલગ-અલગ જગ્યા એ જ્યાં ગયા હોય તે બતાવે. મને ત્યારે આશ્ચર્ય થાય કે હું તો કોઈને કહેતી પણ નથી કે એ ક્યાં જાય છે-ગયા છે, તો અહીં કેવી રીતે પ.પૂ. ગુરૂજીને ખબર પડી જાય છે. પરંતુ **'અંતરથી કરેલી પ્રાર્થના એમને પ્હોંચે છે'**— એનો મારા માટે એ અનુભવ હતો. અત્યારે પણ જ્યારે ખૂબ જ અંતરથી પ્રાર્થના કરી હોય તો કોઈને કોઈ રીતે અનુભવ કરાવે જ કે મને તમારી પ્રાર્થના મળી છે.

ઘણી વાર એવું પણ બને અમે કારમાં બધાં ભેગા જતાં હોઈએ કે ઘરે પણ કોઈ પ્રસંગની ચર્ચા કરતાં હોઈએ, તો એનો જવાબ મંદિરમાં જઈએ એટલે સામે આવે જ અને અમે એકબીજાની સામે તાકીએ કે આપણે જે વાત કરી'તી એ પ.પૂ. ગુરૂજીએ સાંભળી છે.

**અમારા જીવનના કયાં ક્ષેત્રમાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ કામ નથી કર્યું ? એક પણ જગ્યા એવી નથી. જ્યારથી અમે એમના સંપર્કમાં આવ્યા ત્યારથી આજ સુધીના દરેક તબક્કે એ સાથે જ રહ્યા છે...** અમારી પુત્રી—માનસીના લગ્નની જવાબદારી પણ એમણે જ પૂરી કરી આપી. **પ.ભ. ઓ.પી. અગ્રવાલજી** અને **પ.મુ. ડૉલી દીદી** જેવાં ભક્તોના દીકરા **પ.ભ. દીપક**ની સાથે માનસીનો સંબંધ કરાવી ધન્યતા અર્પી. આટલો સરસ પ.ભ. દીપક જેવો દીકરો આપ્યો. સુંદર દેખાવડો, ભણેલો-ગણેલો ને આજના જમાનામાં પાછો સંસ્કારી, નિર્વ્યસની. વળી, **પ.પૂ. દીદીનો તો એ દિવ્ય ભાઈ!** એટલે કંઈ કહેવાનું જ ના રહ્યું...

**આવા દિવ્ય સમાજમાં અમને મૂકી આપ્યા એ જ અમારા જીવનનું અહોભાગ્ય!** હવે આપની ચાહના છે કે **હરિભક્તોને દિવ્ય માનીને જીવતાં થઈએ.** આ જીવનમાં અમે એ કરી લઈએ...

શરીરની બિમારીઓમાં પણ આપ હંમેશા સાથે રહ્યા છો. સામાન્ય ખાંસીથી લઈને કિડનીની બિમારીમાં પણ આપે જ રક્ષા કરી છે. એકવાર તો ડૉ. મુકેશ ભાટિયાએ મને કહ્યું હતું કે આ તમે હરો-ફરો છો, એ ફકત તમને મળેલા પ.પૂ. ગુરૂજીને લીધે જ છે...

આમ બધી જવાબદારીઓ પણ આપે જ પૂરી કરી આપી છે. **બસ, આપનું અને પ.પૂ. દીદીનું સ્વાસ્થ્ય સારૂં રહે અને આપને ધરતી ઉપર વધારે રહેવાનું મન થાય એવું અમારું જીવન બને એ જ પ્રાર્થના.**

**ધન્યવાદ-ધન્યવાદ હે કાકાજી, ધન્યવાદ આપને કે અમારા જીવનમાં પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. દીદી આપ્યાં.**

*— પ્રજ્ઞા શાહ (ગુજરાત ઍપાર્ટમેન્ટ્સ)*

## [ हिन्दी अनुवाद ]

**...'आत्मबुद्धि-प्रीति'– वह क्या है, किसे कहा जाता है– यह अपने वर्तन से प.पू. गुरुजी ने हमें सिखाया।** सिखाया तो खूब है, लेकिन उसमें से हम थोड़ा बहुत ही वर्त सके हैं। मैं गुजरात एपार्टमेन्ट्स में रहती हूँ। वहाँ दस-बारह परिवार एक-दूसरे के साथ आत्मबुद्धि–प्रीति से जुड़े हुए हैं। फिलहाल हमारे जीवन में जो बात सहज बन गई है, वह प.पू. गुरुजी के परिश्रम का ही फल है। एक-दूसरे के घर या प्रत्येक व्यक्ति के प्रति 'यह हमारा या मेरा है' का भाव, एक-दूसरे की चीजें इस्तेमाल करना, एक-दूसरे के साथ जाना-आना, एक-दूसरे की सेवा करनी– यह सब सहज ही बन गया है। सोने के जेवर से लेकर गाड़ी तक हम एक-दूसरे की सहज ही इस्तेमाल करते हो गए। कभी भी सूनापन लगता ही नहीं।

...जब मुझे पेट का अल्सर हुआ था, तब सभी ने मिल कर मेरी ऐसी सेवा की, जिसको शब्दों में व्यक्त करना असंभव हैं। **स्वभाव के वश एक-दूसरे के साथ जब कभी मनमुटाव हो जाता है तब सहज ही यह स्मरण हो आता है कि उस समय हर एक व्यक्ति ने मेरी कैसी सेवा की थी और... उसके प्रति अभाव का भाव दूर हो जाता है।**

सत्संग में आने की मेरी शुरुआत बीमारी के कारण हुई। मुझे दोनों किडनी में कई पथरियाँ थीं। उसके कारण बी.पी. बढ़ा रहता और दो-तीन दिन होते कि मैं बिस्तर में होती। **सौ. शोभनाभाभी** हमारे ऊपर के फ्लैट में नई-नई रहने के लिए आई थीं। वे मुझे बाहर झूले पर बैठे हुए-काम करते हुए देखतीं। उनके मन में विचार आता कि ये बहनजी कहीं जाती-आती नहीं हैं, तो क्या ऊबती नहीं होगी। एक बार उनसे मेरी बात हुई। तब मैंने उन्हें बताया कि मुझे किडनी की काफी प्रॉब्लेम है। उन्होंने मुझसे कहा– चल, हमारे गुरुजी हैं, उनके पास तुम्हें ले जाती हूँ– प.पू. गुरुजी को मैंने कहलवाया कि मेरी दोनों किडनी में पथरी हैं और मुझे वह निकलवाने के लिए उरलीकांचन जाना है। परंतु, घर में सभी वहाँ के लिए तैयार नहीं हैं। प.पू. गुरुजी ने कहलवाया कि जहाँ भी पथरी निकाल दें, वहाँ चले जाओ। आख़िर अमदावाद, मेरे पीहर जाने का कार्यक्रम बना। आश्चर्य की बात है कि प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार वहाँ मैंने एक वैद्य की दवाई की और उसने बिना दर्द के सारी पथरियाँ निकाल दीं। उस समय बीमारी के कारण मुझ से खड़ा भी नहीं हुआ जाता था–ऐसी हालत थी। तब मैंने प्रभु को पुकारा कि ऐसा जीवन किस काम का कि मुझ से अपने आप बाल भी नहीं बनाए जाते और... मुझे अंतर में से जवाब मिला कि हमें जीना है और भक्ति के मार्ग पर चलना है। मेरे मन में विचार आया कि इसके लिए तो जीवंत स्वरूप चाहिए; फोटो (मूर्ति) से काम नहीं चलेगा। इसके प्रत्युत्तर के रूप में **अंतर से आवाज़ आई कि तू श्री स्वामिनारायण मंदिर में जाती है, वहाँ तेरा काम 'प.पू. गुरुजी' के द्वारा होगा।** बाद में मैं दिल्ली आई और सच ही मंदिर में आने लगी। श्री प्रभु का संदेश होने से '**प.पू. काकाजी ने भी मुझे स्वीकार लिया है'– स्वप्न में प.पू. गुरुजी ने मुझे ऐसी प्रतीति भी कराई।**

फिर तो अनुभवों की शुरुआत होने लगी। मैंने 'हरिचरण की सुरसरिताओं' पढ़ने की शुरुआत की थी। उसमें एक बहन को ऐसा अनुभव होता था कि श्रीजी महाराज फिलहाल कहाँ विचरण कर रहे हैं और वहाँ से

अब संघ के साथ उसके यहाँ आएंगे – ऐसा उसे प्रत्यक्ष दिखाई देता और इसलिए वह १५० के लगभग भक्तों का भोजन भी बनवाती और... श्रीजी महाराज सच में वहाँ पहुँचे हुए ही होते। पढ़ते-पढ़ते मेरे मन में आया कि जब ऐसी घटना तब बनती थी और अभी भी श्रीजी महाराज प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी जैसे स्वरूपों के द्वारा प्रगट हैं, तो फिर क्यों ऐसा कुछ सुनने को नहीं मिलता या ऐसी घटनाएँ अब क्यों घटित नहीं होतीं और... आश्चर्य की बात है कि ऐसी घटनाएँ मेरे साथ ही घटने लगीं! प.पू. गुरुजी वडोदरा से दिल्ली लौट रहे थे और बिना किसी संपर्क के मेरे साथ उनकी बात हुई कि हम आ रहे हैं। उसी समय सौ. शोभनाभाभी मेरे घर आईं और मेरे पति राकेशभाई से कहने लगीं – गुरुजी आज वापिस आ रहे हैं। यह सुन कर मैंने तुरंत ही उनसे कहा कि यह बात तो अभी ही मेरे साथ गुरुजी ने की है। बस, उसके बाद तो ऐसी घटनाओं की परंपरा ही जारी हो गई! अगले दिन सुबह ग्यारह बजे मैं तो कार लायसन्स के लिए गई थी। वहाँ मैंने देखा कि प.पू. गुरुजी दिल्ली-स्टेशन पर ट्रेन से उतर रहे हैं। मैंने घड़ी में देखा कि ट्रेन का समय हो गया क्या। तो, ठीक वही समय था।

फिर तो जब भी सोचती कि प.पू. गुरुजी क्या कर रहे होंगे, तुरंत ही जहाँ भी प.पू. गुरुजी होते, वह जगह और क्या बात कर रहे हैं या क्या प्रसंग चल रहा है व सारी बातें नज़र के सामने दिखाई देतीं। एक बार मुझे विचार आया कि प.पू. गुरुजी क्या कर रहे होंगे। उस समय सर्दियों के दिन होने के कारण जल्दी अंधेरा हो जाता था। प.पू. गुरुजी को सेवक से कहते हुए सुना कि स्वामी को बोलो, अब अंधेरा जल्दी होने लगा है, तो शाम की आरती छः बजे शुरू कर दें और... सारी आरती के भी दर्शन हुए। उस समय मैं घर में खाना बनाने की तैयारी कर रही थी। सब्जी काट रही थी। काफी सब्जी तो ठीक थी, परंतु डंठल और छिल्के भी उसके साथ में थे। जब मैं होश में आई तब ख्याल पड़ा कि कूड़ा भी सब्जी के साथ ही है...

एक बार मेरे देवर के यहाँ '**सत्यनारायण की कथा**' थी। उस समय प.पू. गुरुजी हरिधाम जाने वाले थे, सो मुझे स्टेशन उनके दर्शन करने जाना था। लेकिन, घर में से निकलना मुश्किल होने के कारण मैं चलती कथा में मन ही मन अपना भजन करते हुए प.पू. गुरुजी को याद कर रही थी। इतने में तो दिल्ली स्टेशन दिखने लगा और ट्रेन चलने लगी। तब प.पू. गुरुजी दरवाजे के पास खड़े रह कर सभी को 'जय स्वामिनारायण' कह रहे थे... मुझे हुआ कि मुझे यह जो दिखाई देता है, वह सच ही है या मैं कल्पना के घोड़े ही दौड़ा रही हूँ। तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने मुझे बताया कि यह जो दिखाई दे रहा है, वह कल्पना या भ्रम नहीं है; तुझे पूछना हो तो सेवक से पूछना कि ट्रेन में मैंने सबसे पहले प.भ. भांभरी साहेब के घर से आया आलूपौए का नास्ता ही लिया था न। उसके बाद रात को ३:३० बजे ऐसा दिखाई दिया कि प.पू. गुरुजी वडोदरा स्टेशन पर उतरे हैं और उन्हें लेने के लिए कोई नहीं आया है एवं सर्दियों के दिन होने के कारण उन्हें ठंड लग रही है। आधे-पौने घंटे के बाद भी उन्हें लेने आने वाला कोई दिखाई नहीं दिया। तो मेरा यहाँ रोना शरू हो गया। सोते-सोते रोने की सिसकी सुन कर मेरे पति ने पूछा कि क्यों रो रही हो, कुछ हुआ है। तो, मैंने सारी घटना बताई। सुन कर 'वे' बोले कि नहीं, ऐसा नहीं होगा। अभी तो ट्रेन स्टेशन पर पहुँची भी नहीं होगी। अभी साढ़े तीन ही बजे हैं और ट्रेन तो चार बजे के बाद स्टेशन पर पहुँचती है। लेकिन, दो-तीन दिन के बाद प.पू. दीदी से पता चला

कि उस दिन ट्रेन वाकई आधा घंटा-चालीस मिनिट पहले पहुँच गई थी, सो रीसीव करने वाले तब तक स्टेशन पर नहीं पहुँचे थे!

शुरुआत में मैं मंदिर जाती, तब मुझे इनकी (राकेशभाई की ) खूब चिंता रहती थी। उनका काम ट्रावेलिंग का था। सो, उनका बाहर जाना-आना लगा रहता था। इसी दौरान मेरे भाई की प्लेन क्रेश में अकस्मात मृत्यु होने के कारण, एक डर मुझे हमेशा रहता। सो, वे कहीं भी जाते तो मैं हमेशा प.पू. गुरुजी से प्रार्थना करती और उनका ख्याल रख कर सही सलामत घर वापिस ले आने की मनोमन विनती करती। उस दौरान मैं जब भी मंदिर जाती, तब प.पू. गुरुजी मुझे सामने से कहलवाते कि आज राकेशभाई मुंबई गए हैं-कलकत्ता गए हैं; यूँ अलग-अलग जगह वे जहाँ भी गए होते वह बताते। मुझे आश्चर्य होता कि मैं तो किसी को बताती भी नहीं कि वे कहाँ जाते हैं या गए हैं, तो यहाँ प.पू. गुरुजी को कैसे पता चल जाता है। परंतु, **'अंतर से की हुई प्रार्थना उन्हें पहुँचती है'**–इसका मेरे लिए यह अनुभव था। अभी भी जब अंतर से तीव्र प्रार्थना की हो, तो किसी न किसी तरीके से अनुभव कराते हैं ही कि मुझे तुम्हारी प्रार्थना मिली है।

कई बार ऐसा होता है कि कार में हम सब इकट्ठे आते-जाते हों या घर पर भी किसी प्रसंग की चर्चा करते हों, तो मंदिर जाते ही उसका जवाब सामने से मिल जाता है और हम एक-दूसरे के मुँह ताकते हैं कि हम जो बात कर रहे थे, वह प.पू. गुरुजी ने सुनी है।

**हमारे जीवन के किस क्षेत्र में प.पू. गुरुजी ने काम नहीं किया? एक जगह भी ऐसी नहीं है। हम जब से उनके संपर्क में आए हैं, तब से आज तक के हर पहलू में वे साथ ही रहे हैं...** हमारी पुत्री–मानसी के विवाह की जिम्मेदारी भी उन्होंने ही पूरी उठा ली। **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** और **प.मु. डॉली दीदी** जैसे भक्तों के बेटे **प.भ. दीपक** के साथ मानसी का संबंध करवा कर धन्यता प्रदान की। प.भ. दीपक जैसा इतना अच्छा बेटा दिया। सोहणा-रूपवान, पढ़ा-लिखा और आज के जमाने में संस्कारी, निर्व्यसनी और **प.पू. दीदी का तो वह दिव्य भाई!** सो कुछ कहने को बाकी रहता ही नहीं...

**ऐसे दिव्य समाज में हमें रख दिया यही हमारे जीवन का अहोभाग्य!** अब, आपकी चाहना है कि **हरिभक्तों को दिव्य मान कर हम जीते हो जाएँ।** इसी जीवन में हम यह कर लें...

शरीर की बीमारियों में भी आप हमेशा साथ रहे हैं। सामान्य खांसी से लेकर किडनी की बीमारी तक में आपने ही रक्षा की है। एक बार तो **डॉ. मुकेश भाटिया** ने मुझसे कहा भी कि आप जो घूमते-फिरते हो, वो केवल अपने प.पू. गुरुजी के कारण ही...

यूँ सभी जिम्मेदारियाँ भी आपने ही पूरी कर दी हैं। **बस, आपका और प.पू. दीदी का स्वास्थ्य अच्छा रहे और आपको धरती पर अधिक समय तक रहने का मन हो ऐसा हमारा जीवन बने यही प्रार्थना।**

**धन्यवाद! धन्यवाद! हे काकाजी, धन्यवाद! आपको कि हमारे जीवन में प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी दिए।**

***– प्रज्ञा शाह (गुजरात एपार्टमेन्ट्स)***

## 'Jay Swaminarayan'

सौरभ - ३६

…Every moment, every second spent with P.P. Guruji is an experience in itself. If I simply come and sit in front of P.P Guruji I feel some powerful changes in my thoughts, my behavior and living. Just by observing P.P Guruji's daily activities one can very easily understand how planned he is in his working…

Whether it's about seva or about work or about any thing else **P.P. Guruji always looks for perfection.** He wants each and every bit of work done to be absolutely perfect. I feel that he has made certain plans for me in my life and I have nothing much to do but simply follow what he says.

I remember the first day when I came to mandir. I saw P.P Guruji was drinking something. I simply went close to him and said 'Jay Swaminarayan' and as if he knew what I wished, he offered me his glass of juice, which I believe got in my blood and I got attached to him.

I feel that **whenever I left my personal work and came to mandir - either on P.P Guruji's call or for some seva all my work was automatically taken care of in the best manner. Sometimes even more favorably than I would have done on my own.** I was working with Delhi Metro on one of my projects and being a big project, my presence at the site was essential as the officials of Delhi Metro kept on visiting the site at regular intervals. One day I got a call from P. Abhishek bhaiya that P.P. Guruji is going to Mumbai and Amdavad for about 15 days and wants me to join with them. I was a bit confused to answer at once… I called Papa, but Papa told me you decide yourself, I have no objection. I then called P. Abhishek bhaiya and told him 'Yes I'll be coming with you.' But I was a bit worried that if the report is not approved in time then all the payments will be delayed. However, in the evening I made a formal report for submission and the officer just had a look over it and told me that there are certain flaws which he will discuss with me when I'll be back. After returning from the trip, the next day when I went to the office, I was quite prepared for some arguments regarding approval of report. But surprisingly, without any discussion, the officer just asked his junior to bring my measurement report which he immediately signed and told me that he will submit them directly to the upper level so that I may receive my payments at the earliest. It instantly clicked to my mind that P.P Guruji has done all this for me.

P.P Guruji has made my life so much enjoyable and comfortable that I don't have to think of any thing, but simply do what he says. **When ever I am in doubt, I simply**

**follow his guidelines and start doing Dhun and then I always either get the proper solution or get enough strength to withstand that difficulty.**

Once I had certain arguments with Papa regarding the business. The things got so bad that we had stopped talking to each other… One evening when I was sitting with Papa in the office I got so much annoyed that I left the office without telling anyone. Suddenly I don't know what happened that I decided to go to Mandir. I was so depressed and had made up my mind that I will tell P.P Guruji that I don't want to continue to work along with Papa. The moment I entered the hall P.P Guruji started praising me in front of Malkani uncle. P.P Guruji said to Uncle that–

**'*Uncle apko pata hai ye Sunny Engineer hai. Ye apne Papa Sushil Bhaskar ji ke sath hi kaam karta hai aur unki bahut help ho gai hai iske unke saath aane se.'***

Hearing all this, my depression and anger vanished as if P.P Guruji did this to calm my mind. When I reached home, I saw Papa was very angry as I had left the office without informing anyone, but I went close to him, touched his feet and said sorry Papa it was entirely my mistake and I will never repeat. Papa hugged me and everything got sorted out in minutes. P.P Guruji made it look so simple as if nothing had happened.

I feel very much blessed & honored when I think that I have a guide - P.P Guruji in my life. P.P Guruji has showered his kind blessings on me by providing a perfect life partner 'Mukunda' for me… However, when Mummy informed me that they have planned to couple me and Mukunda together, I was shocked for a while but then Mummy told me that P.P Guruji has done all that… I was a bit nervous to handle all these marriage decisions… I told Guruji –

***'Mujhe aisa lagta hai ki Mukunda apko bahut pyari hai. Jaise maine dekha hai ki aap uske liye kaafi kuch karte ho to kya main use khush rakh paunga.'***

To this P.P Guruji smiled and said–

**' *Are jaise wo pyari waise tu bhi to mujhe pyara hai; phir kyun sochta hai.'***

These words went deep with in me and all my nervousness and fear vanished. I felt much happy and relaxed after that.

Both Me and Mukunda wished that our marriage should be very simple and in the presence of P.P Guruji and P.P Didi. When I told this to P.P Didi, she immediately replied–

***'You leave every thing to P.P Guruji, He will do the best for you. Your marriage will be done in such a manner that every one will remember it.'***

When I discussed this with my parents, they were a bit confused at first, but went to P.P Guruji for discussing the matter. And when they came back, they were very much

happy as P.P Guruji explained them how he wants our marriage to be done. P.P Guruji explained them that the marriage will be done in Mandir in Thakurji's hall during Mahapuja which will be performed by P.Abhishek Bhaiya and all the wedding rituals will be accomplished in Mahapuja only. There will be no tents, stage etc. All the satsangis will be present in the marriage. I was very much happy to hear all this from my parents.

After a few days, P.P Guruji called me and asked me to prepare a **wedding intimation** card mentioning that our marriage ceremony will be performed in a very simple way. He also asked me to send this card to all your relatives so that they are informed in advance about the same.

**P.P Guruji took much pain in preparing our marriage intimation card. I was deeply touched by all those activities of P.P Guruji.**

**Our Marriage was unique and remembered by all exactly the way P.P Didi had foretold earlier.**

Just after two days of our marriage, P.P Guruji took me and Mukunda along with other devotees to Dubai.

I simply have no words to express thanks for whatever P.P Guruji has done for me. I pray to Maharaj, for good health of P.P Guruji and P.P Didiji. I want them to stay with us, as they are today, for many-many more years.

I pray to God to give me enough sense to live according to the wishes of P.P Guruji and P.P Didiji.

***– Sunny Bhasker, Delhi***

## [ हिन्दी अनुवाद ]

...प.पू. गुरुजी के साथ गुजारा प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण अपने आप में एक अनुभव है। जब भी मैं प.पू. गुरुजी के पास आकर बैठता हूँ, तब मैं अपने विचारों, व्यवहार और जीवनशैली में एक विशेष प्रकार का बदलाव महसूस करता हूँ। प.पू. गुरुजी की दिनचर्या को ध्यानपूर्वक देख कर कोई भी आसानी से अंदाजा लगा सकता है कि वे प्रत्येक कार्य को किस प्रकार योजनापूर्वक संपन्न करते हैं... फिर चाहे वह कैसा भी कार्य क्यों न हो – सेवा से संबंधित या अन्य कोई कार्य – **वे प्रत्येक कार्य को उत्कृष्ट रूप से पूर्ण होते देखना चाहते हैं।**

मुझे ऐसा महसूस होता है कि उन्होंने मेरे जीवन के लिए भी कुछ योजनाएँ बनाई हैं और मुझे कुछ अधिक नहीं करना, सिर्फ वे जो कहें वही करा करना है। मुझे याद है कि पहली बार जब मैं मंदिर आया, तब प.पू. गुरुजी कुछ पी रहे थे। उनके नज़दीक जाकर मैंने सहज ही 'जय स्वामिनारायण' कहा और मानो मेरे मन की बात जान कर उन्होंने अपना ज्यूस का ग्लास मुझे दिया। मुझे विश्वास है कि वह ज्यूस मेरी रगों में खून के साथ मिल गया और मैं उनसे पूर्ण रूप से जुड़ गया।

मैंने यह भी महसूस किया है कि **जब भी अपने किसी कार्य को अधूरा छोड़ कर, प.पू. गुरुजी के**

**बुलाने पर या किसी सेवा के लिए मैं मंदिर आता हूँ, तो मेरे अधूरे कार्यों को वे बख़ूबी संभाल लेते हैं। कई बार तो मैं खुद करूँ, उससे भी बेहतर हो जाते हैं...** मैं दिल्ली मेट्रो के एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहा था। बड़ा प्रोजेक्ट होने के कारण वहाँ मेरी हाज़िरी अनिवार्य थी, क्योंकि दिल्ली मेट्रो के अधिकारी समय-समय पर वहाँ आकर निरीक्षण करते थे। एक दिन पू. अभिषेक भईया का मंदिर से फोन आया – *गुरुजी पंद्रह दिन के लिए मुंबई और अमदावाद के विचरण पर जा रहे हैं और वे चाहते हैं कि आप भी साथ में चलें।* यह सुन कर मैं थोड़ी दुविधा में पड़ गया और मैंने पापा को फोन किया। पापा ने मुझसे कहा– *मुझे तो कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन तुम अपने काम के हिसाब से देख लो।* फिर मैंने पू. अभिषेक भईया को फोन करके साथ जाने की 'हाँ' भर दी। लेकिन, मन ही मन चिंता थी कि यदि रिपोर्ट समय पर मंजूर नहीं हुई, तो सारा भुगतान भी देर से मिलेगा। फिर भी, जमा करवाने के लिए मैंने एक औपचारिक रिपोर्ट तैयार की। अधिकारी ने इस रिपोर्ट पर केवल नज़र डालते हुए कहा कि इसमें कुछ कमियाँ हैं, जिनके बारे में आपके लौटने पर चर्चा कर लेंगे। दौरे से लौटने पर दूसरे दिन मैं रिपोर्ट पर बहस के लिए मानसिक रूप से तैयार होकर गया था। पर, आश्चर्य! बिना किसी बहस के अफ्सर ने अपने जुनियर से रिपोर्ट मँगा कर उस पर हस्ताक्षर कर दिए और मुझे आश्वस्त किया कि वह यह रिपोर्ट स्वयं ही ऊपरी अधिकारी को जमा करवा देगा, ताकि मुझे जल्द से जल्द भुगतान मिल जाए। उसी क्षण मेरे दिमाग़ में क्लिक हो गया कि प.पू. गुरुजी ने ही यह सब मेरे लिए किया है।

प.पू. गुरुजी ने मेरी जिंदगी इतनी आनंदमय और आरामदायक बना दी है कि मुझे कुछ सोचने-विचारने-करने की जरुरत ही नहीं है। सिर्फ वे जैसा कहें, वही करते रहना है। **मैं जब भी किसी दुविधा में होता हूँ, तो सहजता से उनके द्वारा बताया गया रास्ता अपना कर धुन करने लगता हूँ। तब या तो मुझे उस समस्या का हल मिल जाता है या फिर उससे जूझने के लिए मुझे बल मिल जाता है...**

एक बार व्यापार के सिलसिले में मेरी पापा के साथ कुछ बहस हो गई। नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि हमने आपस में बात करनी बंद कर दी। एक शाम को तो, जब मैं पापा के साथ ऑफिस में बैठा था, मैं इतना उत्तेजित हो गया कि किसी को भी बताए बिना मैं वहाँ से चल दिया। अचानक न जाने क्या हुआ और मैंने मंदिर आने का मन बना लिया। मैंने सोच लिया कि मैं आज प.पू. गुरुजी से बात कर लूँगा कि मैं अब पापा के साथ काम नहीं कर पाऊँगा। जैसे ही मैं मंदिर के हॉल में दाखिल हुआ तो प.पू. गुरुजी ने वहाँ बैठे पू. मल्कानी से मेरी तारीफ़ करनी शुरू कर दी –

***अंकल आपको पता है, ये सनी इंजीनियर है... यह अपने पापा सुशील भास्करजी के साथ ही काम करता है और इसके साथ होने से उनकी बहुत मदद हो गई है और उन्हें बहुत सपोर्ट मिल गया है...***
यह सुन कर मेरी उदासी और रोष गायब हो गए। मानो मेरे अंतर को शांत करने के लिए ही प.पू. गुरुजी यह सब कर रहे थे। घर पहुँचने पर मैंने देखा कि बिना किसी को बताए ऑफिस से मेरे चले जाने से पापा बहुत गुस्से में थे। लेकिन, मैं उनके नज़दीक गया और उनके पाँव छू कर अपनी गलती के लिए उनसे माफ़ी माँगी और दोबारा ऐसा न करने की प्रतिज्ञा की। पापा ने मुझे गले लगाया और कुछ ही पलों में सब कुछ ठीक हो गया। यूँ प.पू. गुरुजी ने यह सब इतना आसानी से कर दिया कि मानो कुछ हुआ ही न हो!

प.पू. गुरुजी को एक गुरु व सच्चे मार्गदर्शक के रूप में पाकर मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली और गौरवान्वित महसूस करता हूँ। मेरे जीवनसाथी के रूप में 'मुकुंदा' को चुन कर उन्होंने मुझ पर अपनी अनहद् कृपा ही बरसाई। मम्मी ने जब मुझे बताया कि वे मेरी और मुकुंदा की शादी करने के बारे में सोच रहे हैं; तो थोड़ी देर के लिए तो मैं स्तब्ध रह गया! लेकिन फिर मम्मी ने बताया कि प.पू. गुरुजी ने ही यह निर्णय लिया है। शादी के निर्णय के बारे में सोच कर मैं थोड़ा ढीला हो गया था। सो, मैंने प.पू. गुरुजी से कहा– ***गुरुजी, मुझे ऐसा लगता है कि मुकुंदा आपको बहुत प्यारी है, जैसे मैंने देखा है कि आप उसके लिए काफी कुछ करते हो, तो क्या मैं उसे खुश रख पाऊँगा?***

प.पू. गुरुजी ने मुस्कराते हुए कहा–***अरे! जैसे वो प्यारी है, वैसे ही तू भी तो मुझे प्यारा है। फिर क्यों सोचता है।***

इन शब्दों से मेरी शंका और डर गायब हो गए। इसके बाद मैं बहुत खुश और अपने आपको हल्का महसूस करने लगा।

मैंने और मुकुंदा ने यही सोचा कि प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी की निश्रा में हमारी शादी सादगी से होनी चाहिए। इस बारे में जब प.पू. दीदी से बात की तो उन्होंने तुरंत कहा–

***प.पू. गुरुजी के ऊपर सब छोड़ दो, वे तुम्हारे लिए जो भी करेंगे, अच्छा ही करेंगे। तुम्हारी शादी ऐसी होगी कि सभी उसे याद रखेंगे...***

जब मैंने अपने पेरन्ट्स से यह बात की, तो शुरुआत में वे थोड़े असमंजस में थे। फिर वे प.पू. गुरुजी के पास इस विषय में बात करने के लिए गए। जब वे लौटे तो बहुत खुश थे और बताया कि प.पू. गुरुजी किस प्रकार शादी कराने की सोच रहे हैं। प.पू. गुरुजी ने उन्हें बताया कि मंदिर में ठाकुरजी के हॉल में पू. अभिषेक भईया महापूजा करेंगे और उसी में शादी की सारी विधि संपन्न होगी। वहाँ कोई टेन्ट या स्टेज नहीं होगा और सभी सत्संगी शादी में मौजूद होंगे। अपने पेरन्ट्स से यह सब सुन कर मैं बहुत खुश हुआ।

थोड़े ही दिन के बाद प.पू. गुरुजी ने मुझे फोन किया कि **शादी का एक परिपत्र** तैयार किया जाए, जिसमें यह बताया जाए कि हम (मैं एवं मुकुंदा) सादगी से विवाह करने जा रहे हैं। उन्होंने मुझसे इस कार्ड को सभी रिश्तेदारों को भेजने के लिए भी कहा ताकि वे अवगत हो जाएँ।

**हमारी शादी का परिपत्र तैयार करने के लिए प.पू. गुरुजी ने स्वयं खूब परिश्रम किया... प.पू. गुरुजी के ऐसे परिश्रम से मेरा अंतर गद्‌गद् हो गया... जैसे कि प.पू. दीदी ने पहले बताया था, वैसे ही सभी ने हमारी शादी को खूब सराहा...**

शादी के दो दिन बाद ही प.पू. गुरुजी मुझे और मुकुंदा को अपने साथ दुबई के दौरे पर ले गए... किन शब्दों में मैं प.पू. गुरुजी का धन्यवाद करूँ? महाराज के श्रीचरणों में प्रार्थना करता हूँ कि प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी का स्वास्थ्य अच्छा रहे। मैं तो यही चाहता हूँ कि वे ऐसे के ऐसे ही अनेक वर्षों तक हमारे मध्य रहें। साथ ही प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे इस बात की शक्ति दें कि मैं प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी की मर्जी के मुताबिक जीवन जी पाऊँ।

***–सनी भास्कर, दिल्ली***

✡✡✡

## 6 मार्च, 2011 ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन की पूर्व संध्या पर

# प.पू. गुरुजी

...प्राप्ति हुई हो और भगवान के स्वरूप का ज्ञान हुआ हो, तो मन में शांति रहे। हम कई बार बोलते हैं कि हमें स्वरूप की पहचान हो गई। अगर हुई हो, तो दूसरों को समझाने की बजाय अपने भीतर शांति हो-मस्ती रहे। हमें शांति नहीं हुई है या उद्वेग ही बना हुआ रहा है, मतलब हमें जो प्राप्ति हुई है, उसे हम समझे नहीं हैं। जो ज्योमेट्री सीखे होंगे, उन्हें पता होगा कि कई थियेरम होते हैं, तो उनके कॉन्वर्स भी होते हैं।

**...कैसे भी विपरीत संजोग हों पर हम मुरझाएँ नहीं, तो समझना कि हमें जो प्राप्ति हुई है**–इसका हमें ज्ञान है... **गुणातीतानंदस्वामी** ने लिखा है कि **कल्याण सिर्फ इस साधु के द्वारा ही संभव है।** बाकी कितना ही तप करो, व्रत करो, दान करो, योग करो, यज्ञ करो, तीर्थाटन करो वो कल्याण नहीं करेगा। इस वचन में विश्वास होना चाहिए कि हमें जो सेवा मिली है, वह ब्रह्मादिक देव को भी नहीं मिलती। यह सेवा करने के लिए दूसरों को तो मौका ही नहीं मिलता... **हम आलस, बेपरवाही रखते फिरें और फिर सोचते हैं कि हमारा कुछ हुआ नहीं।** कैसे होगा? यहाँ अगर दुःख है, तो फिर हमें सुख कहाँ मिलेगा? अपने अंतर में एक बात बैठ जाए ओहो! इससे बढ़कर कोई प्राप्ति नहीं है, तो दूसरा कुछ सुनने-समझने की जरूरत नहीं लगेगी। तुम्हें इंट्रेस्ट ही नहीं होगा कि जाकर देखें तो सही...

...ऐसे संत के सबंध से अन्न भी 'अन्नमय ब्रह्म' बन जाता है–तो हमने सच में माना कि सोए हुए ब्रह्म के दर्शन हो रहे हैं। **जैसे हैं, वैसे अगर हमने पहचाने हों, तब वे राजी होते हैं।** हमारे खूब पुण्य होंगे, तभी यह सत्संग मिला है। वर्ना तो वैभव-विलास, जाहो-जलाली, गाड़ी-कोठी देकर भगवान निपटारा कर देते। यह बात समझने जैसी है कि छोटा बच्चा रोता हो, तो उसे ऑर्डीनरी चॉकलेट देकर निपटा देते हैं, यूँ साधु हमें खूब बड़ी चीज देना चाहते हैं, सो ये छोटी-छोटी चीज देकर वे निपटारा नहीं करेंगे...

...अखबार की बात करो, वो ग्राम्यवार्ता है! **सत्संग में भी इधर-उधर की बातें कि फलां ऐसा है, ढिमका ऐसा है, करें तो वह ग्राम्यवार्ता हो गई...** हम जीवकोटि के हैं, लेकिन गुणातीत संत के माध्यम से हमें अक्षरधाम का राज मिल गया। कोई भी काम करने से पहले भगवान को याद करो। वे हल निकाल ही देंगे। हम याद करते हैं लेकिन श्रद्धा से नहीं; इसलिए, फल नहीं मिलता। अगर **श्रद्धा-उमंग से याद किया**

**हो, तो करोड़ गुना फल मिले। जो भजन मीकैनिकली करते हैं; वह भले बेकार नहीं जाता है, लेकिन करोड़ गुना फल जो मिलना चाहिए, वह नहीं मिलता।** श्रद्धा से मंदिर में झाड़ू लगाए कि मेरे भीतर में भी महाराज झाड़ू लगाते रहेंगे, तब फल मिलता है। पंजाब से कोई सेवक आया हुआ नज़र आए, तो हम चले जाते हैं कि अब यह झाड़ू लगा लेगा। अरे! अपने भीतर जो झाड़ू लगने वाली होगी, वह चांस दूसरों को मिल जाएगा। महिमा हो तो ऐसा नहीं करेंगे। चान्स दूसरों को क्यों दें?

...कंगाली, याचकपना, डर – सारी दुनिया को है। कल 'झांसी की रानी' सीरियल में डॅलहौजी को देखा कि रोने लग गया। इतनी बड़ी हस्ती - ब्रिटिश गवर्नर जनरल ऑफ इंडिया! जबकि **'सगराम वाघरी'** के यहाँ महाराज गए तो **उसकी पत्नी** ने सोचा कि पानी कहां से लाऊँ! बराबर में एक पंडित के बेड़े में पानी का छोटा कुआँ था; वह वहाँ से पानी ले आई। पंडित को ऐसा हो गया कि ये हमारे कुएँ को जूठा कर गई। पर, वह बोली **अरे! क्या जूठा कर दिया? मेरे घर तो भगवान आए हैं, तेरा पानी पवित्र हो गया।** महिमा का ख्याल हो तभी ऐसी बात मुँह से निकल सकती है।

मुझे इस बात का पूरा ख्याल है कि **काकाजी ने आज तक कभी किसी से लिया हुआ रखा नहीं है।** इसी जोर पर मैंने पिछले साल कहा था कि आप लोगों ने चाँदी जो दी है, काकाजी इतनी चाँदी तो तुम्हें दे ही देंगे। एक साल में छब्बीस से पचास हो गई, न! आप जरूर कहोगे कि हमारे गुरुजी ने उस समय कह दिया था कि चाँदी पचास हो जाएगी, वे आगे का देखते हैं। **'वे देखते हैं - अन्तर्यामी हैं'** – ऐसा कुछ नहीं है। दरअसल **मैं काकाजी को जानता हूँ कि काकाजी कभी किसी की चीज रखते नहीं; आपने जितनी चांदी दी, इतनी चांदी तो वे तुम्हें वापिस कर ही देंगे।** यूँ महिमा समझी हो, तो बोल पाएंगे। ऐसे ही उस वाघरन को जगत की कोई परवाह नहीं - गिनती नहीं थी। पर, नींद में और आलस में सब चला जाता है। **संत से प्रीति होगी, तो उनकी बात सही मानी जाएगी। उनकी आज्ञा मानी जाएगी। जैसे-जैसे आज्ञा पालेंगे हमारे सारे काम होते जाएंगे!** अनुभव होगा... तब ख्याल आएगा कि ओहो हो ये सच्चे संत हैं और महिमा जीव में बैठेगी।

**कई कहते हैं कि भई अपने नसीब कहां से कि भगवान के दर्शन हों और हम कहेंगे कि काकाजी के रूप में किए हैं।** ये कोई ब्रेन वाशिंग वाली बात नहीं है। भीतर में - चैतन्य में – इसका एहसास हो जाता है। हमने काकाजी के रूप में, पप्पाजी के रूप में देखे हैं और **आज भी देखने हों, तो चलो हमारे हरिप्रसादस्वामिजी हैं।** एक भजन में है न – 'मावजी मुझ पर खूब अढळक ढळया...' वह कैसा, जैसे मैं कहता हूँ न महेशजी के लिए कि एक तो लड़की का ब्याह हो गया और ऊपर से ऐसा बड़ा संबंध हो गया। भगवान इससे बढ़कर क्या अढळक ढलेंगे। ब्रह्मकोटि में दाखिल हो गए।

भक्तों की कोटि में दाखिल हो गए। लखपति का लड़का अपने आपको गरीब मानेगा? लखपति ही मानेगा। वैसे ही हम अक्षरधाम में ही जन्मे हैं... यही समाधि है। **भगवान और संत मिले – समाधि हो गई।** ये बातें हम सुनते हैं, लेकिन मानते नहीं हैं। **जो सच में मानने लगें, उन्हें जगत की परवाह ही नहीं होगी।** हम सुनते हैं, तो बड़े आश्चर्यचकित होते हैं कि ये तो तीन दिन से समाधि में बैठा है। उसकी महिमा रहेगी। पर, समाधि में जिन भगवान के दर्शन होने थे, वे हमें मिल गए। हमें ऐसी झंझट में जाने की क्या जरूरत है। रामकृष्ण परमहंसदेव यह मानते थे। एक बार वे गंगा नदी के किनारे अपने कपड़े धो रहे थे। इतने में कोई सिद्ध महात्मा उन्हें दिखाने के लिए नदी के ऊपर चल कर गया। रामकृष्ण परमहंसदेव ने सिर तक उठा कर नहीं देखा। फिर उसने एक चक्कर और मारा, फिर भी उन्होंने नहीं देखा। यूँ चार-पांच चक्कर काटे, पर रामकृष्ण परमहंसदेव को तो इसकी कोई परवाह ही नहीं थी। आख़िर वह रामकृष्ण परमहंसदेव के पास गया और कहा कि आपने देखा कि मैंने क्या किया? उन्होंने कहा – नहीं। उसने दोबारा फिर चल कर दिखाया। यह देख कर रामकृष्ण परमहंसदेव खाली मुस्कराए। उसने पूछा – आप मुस्कराए क्यों? इसका उत्तर देते हुए परमहंसदेव बोले – पहले तू मुझे बता कि यह सिद्धि प्राप्त करने के लिए तूने कितने साल तपस्या की। वो बोला – नौ साल से लगा हुआ हूँ। परमहंसदेव बोले – तो, **नौ साल के अंदर तूने दो पैसे का काम किया।** उसने पूछा – कैसे? उत्तर देते हुए परमहंस बोले – **इस नाव वाले को कहूँगा, तो दो पैसे में मुझे गंगा पार उतार देगा। इसके लिए कोई तपस्या करने की जरूरत थी क्या? दो पैसे के काम के लिए तूने नौ साल बेकार कर दिए।** देखो, बात एकदम सही है उनकी। **इसी तरह हमें भी भगवान की प्राप्ति हो गई है, तो दूसरे प्रलोभन में जाएं ही क्यों?** मैंने जब यह प्रसंग पढ़ा, तो खुश हो गया कि मानना पड़ता है! उन्हें पता था कि हमें कहां-किस दिशा में साधना करनी चाहिए। ये सिद्धियाँ तो सायन्स कर देगी... सो, **भगवान और संत मिले, वो ही समाधि। समाधि में जाकर जो देखना है, वे हमें मूर्तिमान नज़र आते हैं...**

जोगी महाराज ने आगे और बात लिख दी है। सब याद रखना **किसी की लॉटरी नहीं लगेगी। जो आप स्वामिनारायण के हैं, इनकी तो लगेगी ही नहीं। महाराज को यह मान्य ही नहीं है।** बापा ने यह स्पष्ट बात कर दी... ध्यान लगा के कोई महात्मा बैठा हो, लेकिन वह बाह्यदृष्टि है। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा – आँख बंद करके भी देखोगे, तो अंधेरा – चक्कर-चक्कर नज़र आता होगा। **भगवान और संत के अंदर तुम खो जाओगे, वही 'ध्यान' है।**

*– 'योगीवाणी' पुस्तक के मुद्दों का प.पू. गुरुजी द्वारा निरुपण*

✡✡✡

## 7 मार्च, 2011 ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन की रजत जयंती सभा

# प.पू. गुरुजी

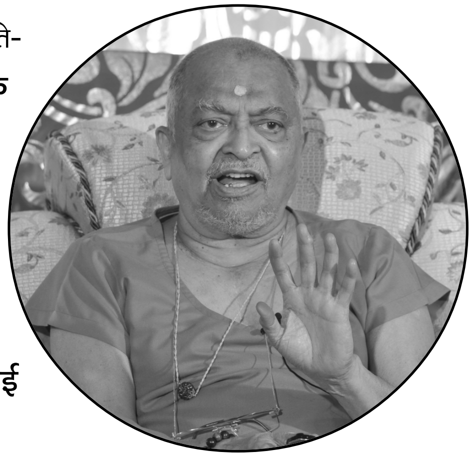

**आज सात मार्च!** तीन दिन से **बहत्तर घंटे की** धुन करते-करते **परिक्रमा की पूर्णाहूति हुई। यह परिक्रमा करने के लिए देवता भी तरसते हैं।**

**यह एक ऐसा ग्रेविटीयुक्त शक्तिस्थल है, जहाँ पर आकर परिक्रमा करने के लिए देवता भी तरसते हैं! जैसी गोंडल की 'अक्षरदेरी' है, वैसा ही यह समाधिस्थल है। रफ लेंग्वेज में कहूँ तो जिस-जिसने भी इस समाधि स्थान के चक्कर काटे होंगे, उनके कई चक्कर ऑटोमैटिकली टल गए होंगे।**

दूसरा आज हमारे नितिन का अनऑफिश्यो मैरेज हुआ। पहले दिन इस डेकोरेशन को देख कर सब खूब खुश हुए... मैंने सोचा कि इतना अच्छा पंडाल बन गया है और यहाँ किसी की शादी हो जाए तो बहुत अच्छा होगा। इतने में विजयपालजी के मन में भी यही विचार आया कि नितिन का रिश्ता पक्का हुआ है, तो उसकी शादी कर देना ठीक रहेगा। पर लड़की का इकलौता भाई अमेरिका रहता है। मैंने तो एक बार कह भी दिया कि उसे बुला लो। लेकिन विजयपालजी ने बताया कि वह अभी आ नहीं पाएगा। इसलिए यह शादी हम अभी नहीं कर पाएँगे। 'लेकिन मेरा मन बहुत हो गया है' – ऐसा विजयपालजी ने कहा। तो मैंने उनसे कहा – आजकल गवर्नमेन्ट का रूल तो है कि बाद में रजिस्टर्ड मैरेज भी करवाना जरूरी होता है। यूँ अभी भगवान के घर में मैरेज करो, फिर सोसायटी के अंदर सोशियल मैरेज और तीसरा मैरेज रजिस्टर्ड – यूँ तीन बार शादी हो जाने से क्या फर्क पड़ेगा? उन्हें लगा कि यह आईडिया बहुत अच्छा है और असल में कहो तो सच्ची मैरेज यही हो गई। पहले मैरेज मंदिरों में ही होती थीं और जिस ढंग से अब हम मैरेज की इस सिस्टीम पर जा रहे हैं, वही सही है।

**चार महीने पहले अखबार में आया था कि अब मेन रोड पर बारात नहीं निकाल पाएँगे। पंद्रह-बीस दिन पहले अखबार में यह भी आया कि मैरेज पार्टीज़ वगैरह में जो सौ-सौ आईटम्स का खाना सर्व और डिस्प्ले किया जाता है, उस पर लोग कटौती करें ऐसा सरकार का कहना है। लिमिटेड आईटम्स ही रखो। एक जगह तो ऐसा भी लिखा था कि बारात में सौ से ज्यादा लेकर जाओगे, तो टैक्स लग जाएगा। हमारे काकाजी बोलते थे कि अभी नहीं करोगे, तो बाद में मायूस होकर (चुमाईने) करना पड़ेगा। इससे अच्छा है न प्रभु की भक्ति समझ कर संतों की सेरेछाया में, भगवान की निश्रा में हम ये विधियाँ ऐसे करते रहें। इससे समाज को भी एक दिशा मिलेगी। जिस जिसने यहाँ इस तरीके से शादी की है, उन सभी के यहाँ से बाद में यही खबर आई है कि गुरुजी ने यह बहुत अच्छा किया, ऐसे ही सबको करना चाहिए। धीरे-धीरे समाज में यह बात फैलेगी। यदि हम अपने आप**

**नहीं करेंगे, तो आगे कायदे तो हैं ही।**

सो, आज बहुत अच्छे काम की शुरुआत हो गई। अब सोशियल मैरेज होगा और उसके बाद रजिस्टर्ड मैरेज करेंगे। पर, **असली मैरेज यही गिनी जाएगी।** हमारे चाँद साहब ने कहा कि हमारे जैसा ढंग और किसी जगह पर है ही नहीं, होगा भी नहीं, पर यही ठीक है। सभी सुलझे हुए लोग यहाँ बैठे हैं। मल्कानी अंकल तो यहाँ की हर एक मैरेज अटेन्ड करते हैं। वे समझते भी हैं कि आगे जाकर समाज यही चीज मांगता रहेगा। **ये सारे चेईंजिस काकाजी ने हम लोगों को सिखाए हैं।**

**काकाजी** के स्वधामगमन के आज पच्चीस साल पूरे हुए। **कैसी विभूति होंगे कि पच्चीस साल के बाद भी जिस-जिसने भी उनके साथ जीवन जीया है, उस-उसके मन में आज वो सारी हिस्ट्री हुबहू पिक्चर की तरह बनी रही है। उन्होंने अध्यात्मिकता के गूढ़ रहस्य खूब सिम्पलीफाईड करके हमें दिए हैं।** एक छोटी-सी बात करता हूँ। हमारे यहाँ की आरती अब तक सिर्फ हिन्दी में थी। वो काकाजी ने नक्शलायलपुरी से हिन्दी में करवाई थी, जिनसे स्वामिनारायण की जीवनी भी हिन्दी में बनवाई थी। रेकॉर्डिंग से एक दिन पहले मैं मुंबई पहुँच गया था। काकाजी ने मुझे उसकी स्क्रिप्ट पढ़वाई। मेरी इच्छा ऐसी रही कि सद्गुरु मुक्तानंदस्वामी ने जो आरती बनाई है, उसके बिल्कुल पॅरेलल बने। बाकी सब तो ठीक था, लेकिन आख़िरी पैरे की लाईन्स मुक्तानंदस्वामी की ऑरिजनल आरती के शब्दों के साथ शब्दशः ट्रान्सलेटेड नहीं लगी। सो मैंने काकाजी से कहा भी कि सारी आरती ऐसी रखी हुई है कि ट्रांसलेशन एक्जेक्ट जैसा है, तो इसे हम क्यों बदल रहे हैं। **काकाजी ने एकदम कहा** कि **महाराज ने जो किया है , उसे नक्शलायलपुरी ने एक्जेक्ट शब्दों में रख दिया है।** तो यही रखनी है। **वह क्या कि भगवान स्वामिनारायण ने मुक्ति सुगम कर दी।** जिस मुक्ति के लिए ऋषिओं, मुनिओं और योगियों ने जंगल में जाकर तपस्या की, तप किए, योग किए, तीर्थाटन किए या भगवान की खोज में घूमे, पर **सहजानंदस्वामी ने खुद मानव स्वरूप में अवतरण लेकर साथ में गुणातीतानंदस्वामी को लाकर पारमेश्वरी चेतना को मानव स्वरूप में अखंडित रखते हुए हमें एक लिफ्ट दे दी है।** जैसे पहले ठाकुरजी के हॉल में सीढ़ियाँ चढ़कर मुझे ऊपर आना पड़ता था, मैं मुश्किल से एक बार आता था। जबकि अब लिफ्ट होने से दिन में पाँच बार भी आ जाता हूँ। खूब आसानी कर दी है। वैसे ही, **सहजानंदस्वामी ने भगवान भजने के लिए, भगवान की सेवा करने के लिए, भगवान की मूर्ति सिद्ध करने की प्रक्रिया एकदम आसान कर दी।** यह बात हम सब बोलते हैं और आरती में भी गाते थे। लेकिन हमें ठीक से समझ में नहीं आती थी। काकाजी, पप्पाजी वगैरह ने सबसे बड़ा पहला काम यही किया कि भगवान स्वामिनारायण ने आध्यात्मिकता में जो सरलता समाज को दी , उसे समझाया। हमारी एक टेन्डेन्सी होती है कि जिस रास्ते चलते रहे हैं, उसी रास्ते पर चलते रहते हैं। उसके बजाय महाराज ने जो नई टेक्नीक खोल-खोलकर बता दी और चाबियाँ दीं , उसके मुताबिक चलें।

पहले भी मैंने बात की थी। अभी तो ये चाबी कोई जानता भी नहीं होगा। लेकिन जो पुराने समय का एरेथमैटिक सीखे होंगे, उन्हें पता होगा – 'जितने रूपये का मन, इतने आने का ढाई सेर' – ऐसी एक चाबी थी। कोई भी चीज बाजार में लेने जाओ तो जितने रुपये मन है, तो तुरंत हिसाब करेंगे कि ढाई सेर लेना है, तो इतने ही आना देना है। मानो – फट् एकदम फार्मूला, कोई गिनती वगैरह में जाने की जरूरत नहीं है। काकाजी और पप्पाजी ने खोज-खोज कर ये चाबियाँ निकाली हैं...

ओहो हो! वचनामृत में कैसी-कैसी चीजें हैं, जो उन्होंने फट् समझाई! वचनामृत लोया १३ में स्पष्ट है 'तुच्छ जैसा जीव' भी यदि निर्विकल्प रूप से प्रगट में जुड़ गया हो, तो वह हर प्रकार की परिस्थिति में शुद्ध रहता है। पर, क्या यह बात गुणातीत की है, यह पूछने पर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने बताया था कि क्या गुणातीत के लिए महाराज 'तुच्छ जैसा जीव' शब्द कभी इस्तेमाल करेंगे?

इस बात से मैं ये समझाना चाहता हूँ कि ऐसी कॉम्पलीकेटेड बातें – आध्यात्मिकता की जटिल समस्याएँ – कितनी आसानी से इन पुरुषों ने हमें समझाईं हैं। **काकाजी** इसी बात को अलग ढंग से **१९८६ की छब्बीस जनवरी** को बोले कि सारी व्यवस्था - मिकेनिजम तैयार – करके रखा हुआ है। तुम्हें सिर्फ स्वीच ऑन ही करनी है। हमें कोई चीज समझने की भी जरूरत नहीं है। जैसे आज छोटे बच्चे भी टी.वी. वगैरह फट् ऑन करके चला देते हैं और प्रोग्राम्स के चैनल भी बदल देते हैं, जो शायद हमें बदलना नहीं आता। इसी तरह **काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी जैसे गुणातीत संतों ने आध्यात्मिकता की जटिल समस्याएँ – कठिन रास्ते आसान कर दिए हैं। हमारा फर्ज़ इतना ही है कि इन विभूतियों का भरोसा करके हम चलें।** हम ये बातें जरूर करते हैं, लेकिन चलते नहीं हैं। गुणातीतानंदस्वामी ने भी कहा है कि 'सत्संग' मिला लेकिन संग तो हमें करना होगा... जैसे कि खाना परोसा हो, लेकिन हम खाएं नहीं तो भूख कैसे जाएगी? **यूँ संत के भरोसे से जब तक उनका संग नहीं करेंगे, तब तक हम में कोई बदलाव नहीं आएगा और हम में बदलाव आए, यही तो सत्संग का फल है। सत्संग का फल ही यह है कि हमारे स्वभाव बदलें, हमारी प्रकृति बदल जाए।** हमें देखकर किसी को भी लगे कि इन्हें कोई सत्संग ऐसा मिल गया है कि ये एकदम बदल गए। यह हमारे अंदर आए, तो ऐसी विभूतियों का एहसान चुकाने की हमने कोशिश की ऐसा मानना। ऐसा बुद्धियोग हम सब को मिले। सत्संग के फलस्वरूप हमारे जीवन में, हमारे संसार में, हमारे घर में तन, मन, धन और आत्मा से सुख-शांति और आनंद बना रहे। आत्मा में परमात्मा का अखंड वास हो जाए, इसके लिए हम भजन किया करें। इससे बढ़कर मानव जीवन का कोई लक्ष्य बिन्दू हो ही नहीं सकता। यह आसान बात हमारे लिए सुलभ हो गई है। तो संतों के नक्शेकदम पर चलते रहें, ऐसा हम सब का मन बन जाए, काकाजी आज ऐसे आशीर्वाद दें – यही प्रार्थना।

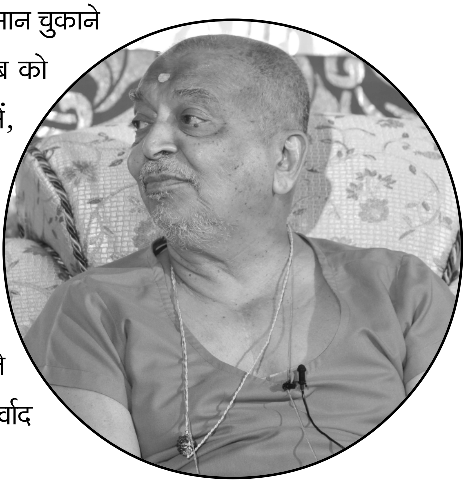

# पू. मल्कानी अंकल

जब से बहत्तर घंटे की परिक्रमा की शुरूआत की है, तब से मैं यहाँ रोज आता रहा हूँ। रोज कुछ न कुछ नया होता ही है। आज आया तो एंट्री पर मुझे ऐसा ख्याल पड़ा कि मैं जो कुछ देख रहा हूँ वह सच्चाई है या कुछ और? आँखे मुझे कुछ गलत दिखा रही हैं क्या। नज़दीक आया तो देखा कि यहाँ **काकाजी** बैठे हुए हैं। उन **की मूर्ति** ऐसी बनी हुई है। **चमत्कारी–बिल्कुल रीयल लगती है।** लगने की बात और, एक फील करने की–सेन्स करने की बात और है। दिल से रोज आने की जल्दी होती है, पर यहाँ से जाने का मन नहीं होता है। यहाँ का इतना रंगीन एट्मोस्फीयर है, उसे छोड़ कर जाने के लिए मेरा दिल ही नहीं मानता। **मोस्ट एट्रैक्टिव बात कि रंगीन गुरुजी! गुरुजी** का स्वभाव ऐसा है कि **जितने आज के ज़माने के हैं, उतने ही प्राचीन ज़माने के भी हैं।** दो दिन पहले भी मैंने कहा था कि **गुरुजी ने इतने वर्षों में बहुत कुछ दिया है, बहुत कुछ समझाया है, बहुत कुछ कोशिश की है। मगर उसमें से हमने कितना लिया है, वो तो हम ही जानते हैं।** अभी भी लेने के लिए तो बहुत कुछ है। **गुरुजी का कोई भी एक प्रवचन हम पकड़ कर उस पर चलें, तो हमारा पूरा कल्याण हो जाए।** अंग्रेजी में कहें तो **रिडैम्पशन–ट्रान्सफोरमेशन हो जाए।** जब मैं शुरुआत में आया, तो मेरी समझ में नहीं आता था कि मंदिर में इतने फंक्शन्स क्यों करते हैं। मगर आज मैं सोचता हूँ तो समझ में आता है कि गुरुजी जैसे बड़े संत की कोशिश यही रहती है कि हम लोग एक-दूसरे से मिलें, एक-दूसरे को पहचानें। एक तरीके से मिलाप हो जाए और वननेस हो। हम आपस में सारे एक फॅमिली की तरह जुड़े रहें। एक-दूसरे को जानें, एक दूसरे के नज़दीक आएँ, दूर न जाएँ। गहराई से देखेंगे तो सब जितने यहाँ बैठे हैं, वो मुझे भी महसूस होना चाहिए या मेरा ही ऐसा नज़रिया होना चाहिए कि वे सब गुरुजी के जैसे ही हैं, प्रभु के जैसे ही हैं। दरअसल वो एक स्टेज है, जो पता नहीं कब आएगी? उसके लिए उम्मीद भी करते हैं। लेकिन जैसे कि गुरुजी समझाते हैं कि उसके लिए भजन-प्रार्थना करनी है। आज भी मैं दिल से मानता हूँ और कन्विन्स्ड हूँ कि गुरुजी को वच्छराज, वच्छराज नहीं दिखता, मल्कानी, मल्कानी नहीं दिखता। उसी हिसाब से वे हमारी कई गल्तियों को माफ़ कर देते हैं। वे टोलरेट करते हैं और समझाते हैं। साथ ही आगे बढ़ाते हैं और बहुत कोशिश करते हैं।

तो, आज गुरुजी को फिर एक बार जन्मदिन की बहुत-बहुत मुबारक देता हूँ। बहत्तर घंटे की इस परिक्रमा का सबको बहुत लाभ हुआ और आगे भी मिलता रहेगा। गुरुजी ने इस बार का जो कार्ड बनाया है, उसके कवर पर करन्सी की जिंगिल दिखाई है। मतलब पैसे की छन छना छन और अंदर गुरुजी ने जो लिखा है वो मैजिक है। कौन-सा मैजिक? स्पीरिच्युअल मैजिक कि **अक्षरधाम की करन्सी है स्वामिनारायण मंत्र! अपने गुरु का ध्यान रखते हुए जो भी स्वामिनारायण मंत्र का जाप करेगा, उसका सब कुछ हो जाएगा।** जो भी उनकी इच्छा है, चाहे धन-दौलत की, चाहे फेम की, चाहे स्पीरिच्युअल प्रोग्रेस की, सब कुछ हो जाएगा। गुरुजी ने आशीर्वाद दिए हैं और मुझे विश्वास है, जिसकी जो कामना–इच्छा है, वह इस साल पूरी हो जाएगी...

*(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)*

✡✡✡

*शेष अगले अंक में...*

## याद कराने...

**2012** के मंगलमयी वर्ष में **प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार को 60 वर्ष** पूर्ण हो रहे हैं,
सो, अब 2012 की 3, 4 एवं 5 फरवरी के तीन दिन
**'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** के रूप में मनाएंगे
और...
तब साथ ही प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव भी मना लेंगे।
**तो, प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती एवं**
**प.पू. गुरुजी के 75वें प्राकट्योत्सव निमित्त**
**प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी के अनुभव,**
**जो आपको भीतर तक छू गए हों,**
**उन्हें हिन्दी/अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते* पर भेजते रहें,**
जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।
सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

## 'योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

## યાદ કરાવવા...

**2012** ના મંગળકારી વર્ષે **પ.પૂ. કાકાશ્રીના સાક્ષાત્કારને ૬૦ વરસ** પૂરા થાય છે,
તેથી હવે ૨૦૧૨ની ૩, ૪ ને ૫ ફેબ્રુઆરીના ત્રણ દિવસ
**'યોગી પરિવાર હીરક આનંદોત્સવ'** રૂપે ઊજવીશું;
અને...
ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ પણ ભેગો ઊજવી લઈશું.
**પ.પૂ. કાકાશ્રીના સાક્ષાત્કારની હીરક જયંતી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે**
**પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના અનુભવ-પ્રસંગો**
**જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,**
**એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,**
જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.
સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

# व्रतोत्सवसूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **(1)** | **दि. 11.7.2011,** | **सोमवार** | **—** | **देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ** |
| **(2)** | **दि. 15.7.'11,** | **शुक्रवार** | **—** | **गुरुपूर्णिमा – व्यासपूर्णिमा** ***(सुबह 8:00 से 9:30 ताड़देव मंदिर में मनाएँगे। जो इस समय न आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)*** |
| (3) | दि. 26.7.'11, | मंगलवार | — | एकादशी – व्रत |
| (4) | दि. 31.7.'11, | रविवार | — | श्रावण मास – प्रारंभ |
| (5) | दि. 9.8.'11, | मंगलवार | — | पवित्रा एकादशी – व्रत *(ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने।)* |
| **(6)** | **दि. 13.8.'11,** | **शनिवार** | **—** | **श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन** ***(सुबह 8:30 से 10:00 प.पू. गुरुजी से शाश्वत् रक्षाकवच प्राप्त करने के लिए महापूजा-प्रार्थना करेंगे।)*** |
| (7) | दि. 15.8.'11, | सोमवार | — | भारत का स्वातंत्र्य दिन |
| (8) | दि. 19.8.'11, | शुक्रवार | — | नाग पंचमी |
| (9) | दि. 20.8.'11, | शनिवार | — | रांधण छठ (षष्ठी) |
| (10) | दि. 21.8.'11, | रविवार | — | शीतला सातम (सप्तमी) |
| (11) | दि. 22.8.'11, | सोमवार | — | **जन्माष्टमी** – व्रत |
| (12) | दि. 25.8.'11, | गुरुवार | — | एकादशी – व्रत |
| (13) | दि. 29.8.'11, | सोमवार | — | श्रावण मास – समाप्त |
| (14) | दि. 1.9.'11, | गुरुवार | — | **ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज का प्रागट्य दिन**, गणेश चतुर्थी |
| (15) | दि. 8.9.'11, | गुरुवार | — | जलझीलनी एकादशी – व्रत |
| (16) | दि. 11.9.'11, | रविवार | — | अनंत चतुर्दशी – गणपति विसर्जन |
| (17) | दि. 13.9.'11, | मंगलवार | — | ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज – स्मृति पर्व |
| (18) | दि. 16.9.'11, | शुक्रवार | — | ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व |
| (19) | दि. 22.9.'11, | गुरुवार | — | भगवान श्री स्वामिनारायण – स्मृति पर्व |
| (20) | दि. 23.9.'11, | शुक्रवार | — | ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज – स्मृति पर्व |
| (21) | दि. 24.9.'11, | शनिवार | — | एकादशी, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज – स्मृति पर्व |
| (22) | दि. 25.9.'11, | रविवार | — | मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एवं ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज – स्मृति पर्व |

# આવો દિલ્હી........................................ ૩, ૪, ૫ – ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૨

*(કાકા હે ! આકાશ છો તમ, બહુ આવો યાદ પ્રીતમ...)*

ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની પ્રગટની યુગલ ઉપાસનાના સ્વરૂપસિદ્ધ,
બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના રાજદુલારા અને બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજના પ્રાણજ્યોતિ એવા પ.પૂ. કાકાશ્રી!
એમણે સર્વપ્રથમ ઝંપલાવી અસલી નારાયણને જોયા ને પરમ પૂજ્ય યોગીબાપા રૂપે એ પ્રગટ પ્રભુને ઓળખી-પામી-રાખી-વશ કરી
આપણને ઓળખાવ્યા, આપ્યા ને એમાં રહેતાં કર્યાં! પોતાને થયેલા સાક્ષાત્કારની તો જાણે લ્હાણી કરી!
તેથી જ, જોગી જગતના તેઓ સર્જક બન્યા-સુકાની બન્યા!!
આપણ સહુ માટે અરે! અનેક ભક્તો-મુક્તો માટે સંકલ્પ પરની દિવ્યભૂમિકાની પ્રેરણામૂર્તિ બન્યા ને દૃષ્ટાઓના દૃષ્ટા બન્યા!!!
એમને લઈને તો 'યોગી પરિવાર'માંથી પાંગરેલા 'ગુણાતીત સમાજ'માં આજે આપણું સહુનું અસ્તિત્વ છે.
એ **ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના આ ઐતિહાસિક અને અપૂર્વ સાક્ષાત્કારની હીરક જયંતી** ૨૦૧૨ની ત્રીજી ફેબ્રુઆરીના શુક્રવારે આવી રહી છે.
આપણે સહુ ભેગા મળી **'યોગી પરિવાર હીરક આનંદોત્સવ'રૂપે એ ૨૦૧૨ના શુક્ર-શનિ-રવિવારે એમ ૩, ૪ અને ૫ ફેબ્રુઆરી**ના ત્રણ દિવસ
દિલ્હીના આપણા મંદિરે સર્વે પ્રત્યક્ષ ગુણાતીત સ્વરૂપો, ગુણાતીત સમાજના સહુ જ્યોતિર્ધરોની નિશ્રામાં
અને
દેશ-વિદેશના અનેક મુક્તોની હાજરીમાં અનેરા ઉત્સાહથી ભક્તિભાવપૂર્વક ઊજવીશું.
વળી, બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ દ્વારા ૧૯૬૧માં દીક્ષિત ૫૧ યોગેશ્વરો પૈકીના
અને
ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના દિવ્ય માનસપુત્ર ને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોના લાડીલા
ને
અનેક સાધક મુક્તોના આદર્શ તેમજ કુટુંબભાવથી ઓતપ્રોત એવા વિશાળ ભક્ત સમુદાયના હૃદય સિંહાસને વિરાજેલા
ગુરૂ, સુહૃદ્ અને પથપ્રદર્શક એવા આપણાં સહુના વ્હાલા **પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ** પણ આ વર્ષે જ આવી રહ્યો છે.
ગુરૂભક્તિના આદર્શ એવા પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીની અંતરની ઈચ્છા અને આજ્ઞાને અનુસરી
એમનો આ ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ **આ મહોત્સવ અંતર્ગત જ ૫મી ફેબ્રુઆરીના સાંજે ઊજવીશું.**

**પરમ પૂજ્ય હંસાદીદી**ના શબ્દોમાં – **'કાકા રે, કાકા રે, આજ આવ્યું ટાણું ; નજરાણું તમને દેવાનું...'**

તો, આ દિવ્ય મહોત્સવે સપરિવાર મિત્રમંડળ સહિત **૨૦૧૨ની ફેબ્રુઆરીના આ દિવસોમાં દિલ્હી આવવું રખે ચૂકતા...**

**આવો... પધારો... ધન્ય થાઓ...**

# आओ दिल्ली...

**दिनाँक ३-४-५ फरवरी, २०१२ के शुक्र-शनि-रविवार को**

**गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज के लाड़ले दिव्य मानस सपूत, बृहद् गुणातीत समाज के अजोड़ सर्जक**

**एवं**

**हम सभी के प्राणाधार गुरुहरि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के ऐतिहासिक और अपूर्व साक्षात्कार की हीरक जयंती महोत्सव और इसी के अंतर्गत**

**ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा दीक्षित,**

**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के लाड़ले**

**व**

**हम सभी के आदर्श, सुहृद्, पथप्रदर्शक प.पू. गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्य दिन मनाने...**

## 'चातुर्मास के नियम' 11 जुलाई, सोमवार से 6 नवंबर 2011, रविवार तक

**भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु इस चातुर्मास दौरान सभी सत्संगी प.पू. गुरुजी की आज्ञा के मुताबिक निम्नलिखित नियमों का पालन करें।**

1. सावन के महीने यानि – 31 जुलाई से 29 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
2. 11 जुलाई — नियम की एकादशी
   22 अगस्त — जन्माष्टमी
   8 सितंबर — जलझीलनी एकादशी
   6 नवंबर — कार्तिक शुक्ला एकादशी
   इन चारों दिन व्रत रखें।
3. चातुर्मास दौरान मंदिर में यथाशक्ति महापूजा करवाएं।
4. रोज सुबह या सायं '**स्वामिनारायण महामंत्र**' का अजपाजप करते हुए चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
5. सप्ताह में समय निकाल कर एक बार गुणातीत कुनबे के किसी भी मुक्त के घर उन्हें मिलने-करने, धुन-भजन करने, खबर देखने, कोई कार्य में हाथ बँटाने जाएँ।
6. **चातुर्मास दौरान छोटे-बड़े किसी भी प्रसंग में प्रगट प्रभु को ही कर्ता-हर्ता न मान कर बाह्यदृष्टि रखते हुए वर्ताव कर दिया हो, तो नित्य के 400 मंत्र लेखन के अतिरिक्त उस दिन 'प्रायश्चित् रूप' में 200 मंत्र अधिक लिखें।**

*(Air Mail)* '**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
**If undelivered please return to :—** *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
***'Taad-dev'*****,** Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
*Printed at :* **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052